RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2024-26
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

शिव आमंत्रण

नव वर्ष 2024

26 JANUARY गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण
वर्ष-11, अंक-01, हिन्दी (मासिक), जनवरी 2024, पृष्ठ 16, मूल्य- 12:50

नया साल 2024 : नव संकल्प, नव निर्माण से बना दें यादगार

देशभर से चुनिंदा 24 भाई-बहनों की जीवन कहानी
जो साहस, संघर्ष और समर्पण की मिसाल है

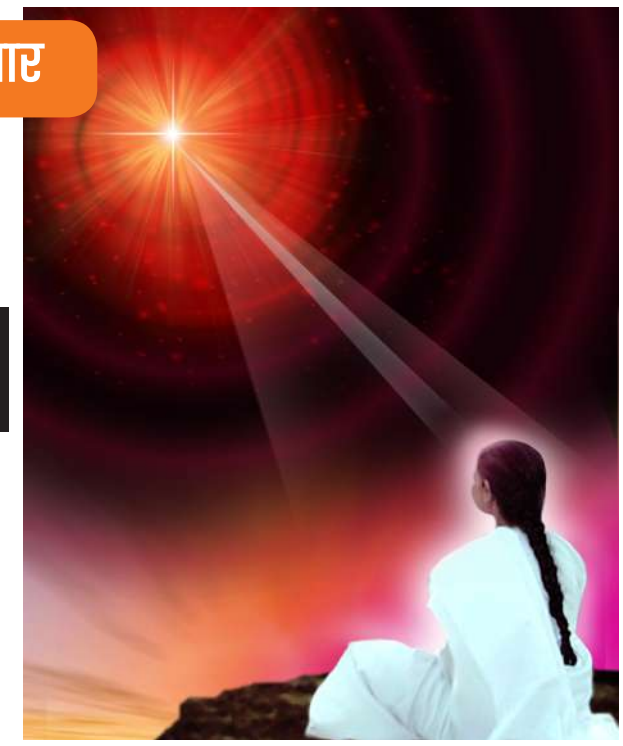

शिव आमंत्रण ने देश के अलग-अलग हिस्सों से जीवन को प्रेरणा से भर देने वाले राजयोगी भाई-बहनों को खोजा

संकल्प शक्ति के 24 साधनावीर

उम्मीदों का सूर्योदय...

जीवन में घना अंधेरा क्यों न हो, एक दिन ढल जाएगा, उम्मीदों का सूर्योदय फिर से नव प्रकाश लेकर आएगा

शिव आमंत्रण, आबू रोड। नया साल हमारे जीवन में उमंग-उत्साह और उल्लास लेकर आता है। नए साल 2024 का स्वागत नए संकल्प और नव निर्माण के साथ करें। प्रत्येक पल को शुभ, श्रेष्ठ संकल्प और खुशी के खजाने से भरपूर करने का लक्ष्य लेकर चलेंगे तो साल के 365 दिन त्याग-सेवा-समर्पण की त्रिवेणी बन जाएंगे, जो जीवन को नई दिशा प्रदान कर आदर्श और प्रेरक व्यक्तित्व के निर्माण में मील का पत्थर साबित होंगे। शिव आमंत्रण ने देशभर से चुनिंदा 24 भाई-बहनों को खोजा जिनका जीवन संयम, सेवा और साधना की मिसाल है। जिन्होंने अपनी संकल्प शक्ति से कैंसर जैसी असाध्य बीमारी से लेकर ब्रेन ट्यूमर, बीपी, हार्ट जैसी बीमारियों को न केवल हराया बल्कि राजयोग का प्रयोग कर दूसरों के लिए मिसाल बने हैं। वहीं परमात्मा से सच्चे प्रेम का सबूत दिया है कि जब हम दिल से ईश्वर को याद करते हैं तो वह दौड़ा चला आता है।

नया साल, नव संकल्प : मन के सशक्तिकरण पर हो फोकस

मन का रोल हमारे जीवन में सबसे अहम और महत्वपूर्ण है। कहा भी जाता है मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। जिसका मन शक्तिशाली, मजबूत है वह जीवन की प्रत्येक आपदा को खुशी-खुशी पार कर लेता है। इतिहास में जिन्होंने भी असाधारण कार्य किया है वह अपनी मनोबल के कारण ही किया है। हमारा मनोबल जितना ऊंचा, श्रेष्ठ और महान होगा जीवन का स्तर पर भी उतना ही महान होता है। कई बार मन की परिधि से शुरु हुआ कोई विचार कैसे कर्म में तब्दील हो जाता है हम समझ ही नहीं पाते हैं। इसलिए अपने मन को सदा श्रेष्ठ, सकारात्मक, महान विचारों की खुराक देते रहना जरुरी है। मन एक बच्चे की तरह है जिसे प्रतिपल गाइड करना और कंट्रोल करना जरुरी है। अच्छे साहित्य, अच्छा संग, अच्छे विचार, मेडिटेशन और ईश्वर के ध्यान से मन मजबूत बनता है।

ध्यान : मेडिटेशन हो जीवन का हिस्सा...

आज की दौड़ती-भागती जिंदगी में हम कब तनाव, निराशा का शिकार हो जाते हैं इसका एहसास ही नहीं हो पाता है। मेडिटेशन हमारे मन को शक्तिशाली बनाने के साथ शरीर को स्वस्थ और तंदुरुस्त रखता है। नियमित मेडिटेशन से मन से जुड़े सारे विकार दूर हो जाते हैं। स्मरण शक्ति बढ़ने के साथ एकाग्रता बढ़ जाती है। लक्ष्य पर फोकस करने में मदद मिलती है। मन की पॉवर बढ़ती है, दिमाग तेज होता है और उमंग-उत्साह बना रहता है। सुबह कुछ पल का ध्यान सारे दिन को बना देता है। दिनभर ऊर्जा का एहसास होता है। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्रों पर नि:शुल्क राजयोग मेडिटेशन सिखाया जाता है। अपने कीमती पलों में से समय निकालकर एक बार अवश्य राजयोग सीखने का प्रयास करें।

हर समस्या के तीन समाधान हैं- स्वीकार करें, बदल दें या छोड़ दें...

स्वीकार्यता: जीवन में स्वीकार करना सीखें...

स्वस्थ रिश्ते के लिए सबसे जरुरी शर्त है स्वीकार्यता। पति-पत्नी, सास-बहू, पिता-पुत्र के रिश्ते जीवनभर कई बार इसलिए प्रेमपूर्ण नहीं बन पाते हैं क्योंकि वह एक-दूसरे को अंदर से स्वीकार ही नहीं करते हैं। धरती पर प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में अनोखा और अलग है। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह आपका कितना भी करीबी रिश्ते में हो सभी का सोचने का नजरिया, आदतें, व्यवहार को लेकर अपना नजरिया होता है, जिसे वह कई बार चाहकर भी बदल नहीं पाता है। ऐसे स्थिति में जरुरी है कि हम खुद पहल करते हुए उनके साथ चलना सीख लें या वह जैसे हैं, उसी रुप में स्वीकार कर लें। यकीन मानिए आपके रिश्ते मधुर, प्रेमपूर्ण हो जाएंगे। आपको देखकर एक दिन वह भी बदल जाएंगे। इसी तरह समाज में जिन चीजों को आप बदल नहीं सकते हैं उन्हें वैसे ही उसी रुप में स्वीकार करना सीख लें। आपका मन सदा खुशी से भरपूर रहेगा।

परिवर्तन: जो आपके हाथ में है उसे बदल दें...

हमारी जिंदगी में कई चीजें ऐसी होती हैं जो कंट्रोल में होती हैं और उन्हें मजबूत इच्छा शक्ति, दृढ़ संकल्प, आत्म विश्वास, लगन और मेहनत से बदल सकते हैं। ऐसी चीजों को जितने जल्दी हो सके बदल दें। जैसे- कोई ऐसी आदत जो आपकी तरक्की और सफलता में बाधक बन रही है उसे जल्द से जल्द छोड़ने में ही भलाई है, वरना एक दिन वह आपको बर्बाद कर देगी। यदि आप सेहत को लेकर लापरवाह हैं और अव्यवस्थित दिनचर्या है तो इसे आज से ही बदल दें। एक्सरसाइज अपनाएं और एक व्यवस्थित दिनचर्या अपनाएं। क्योंकि यदि सेहत अच्छी रहेगी तो आप अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। दूसरा दुनिया में जितने भी सफल लोग हुए हैं उनकी एक व्यवस्थित दिनचर्या होती है। इसमें सबसे अहम है सुबह जल्दी उठना। ये वह चीजें हैं जिन्हें आप बदल सकते हैं।

विश्वास : जिन्हें बदल नहीं सकते उन्हें ईश्वर पर छोड़ दें

जीवन में अचानक कोई समस्या आ जाए जो आपके कंट्रोल से बाहर है, जिसे बदल नहीं सकते हैं तो उसे ईश्वर पर छोड़ दें। यदि लगातार प्रयास के बाद भी किसी क्षेत्र में सफलता नहीं मिल रही है तो प्रयास करना जारी रखें साथ ही उसे ईश्वर पर छोड़ दें। इससे तनाव से बचे रहेंगे और उस पर बेहतर तरीके से फोकस कर पाएंगे। कई बार जीवन में अचानक ऐसी विपदाएं आ जाती हैं जो हमारी सोच से परे होती हैं, जिन पर हमारा वश नहीं होता है, ऐसे में उन्हें ईश्वर पर अर्पण कर देना ही सुखी जीवन का महामंत्र है। यदि आप मुखिया हैं तो सलाह दें, मार्गदर्शन दें इसके बाद भी कोई सदस्य नहीं मानता है तो फिर उसे उसके हाल पर छोड़ दें। प्रत्येक मनुष्य आत्मा का अपना-अपना भाग्य है।

नोट: अंदर के पन्नों पर पढ़ें... जीवन को बदलने वाली खास 24 स्टोरी

जोश-जज्बा-जुनून

खुद पर विश्वास और प्यार करें

सारा संसार एक तरफ और हमारा जुनून एक तरफ

स्टोरी 01

अंतरराष्ट्रीय पैरा बैडमिंटन खिलाड़ी चरनजीत कौर दिव्यांग बच्चों और युवाओं के लिए बनीं प्रेरणास्रोत

शिव आमंत्रण, दिल्ली।

हौसलों से उड़ान होती है, मंजिल उन्हें मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है। इन पंक्तियों को दिल्ली निवासी चरनजीत कौर ने साबित कर दिखाया है। 25 मई 1983 को पटियाला, पंजाब में साधारण परिवार में जन्मी चरनजीत को महज तीन साल की उम्र में एक पैर में पोलियो हो गया। उन्होंने हार नहीं मानी और तमाम विरोध के बाद भी पैरा बैडमिंटन में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नाम रोशन किया। पिता करनैल सिंह ने हर संभव इलाज कराया लेकिन पैर ठीक नहीं हो सका।

शिव आमंत्रण से विशेष बातचीत में चरनजीत कौर ने बताया कि बचपन से मां हरपाल कौर मेरी शक्ति रहीं। हमेशा उन्होंने मेरा हौसला बढ़ाया। मां के निधन से मन कमजोर हो गया था। शादी के बाद खेल छूट गया। वजन बढ़ने से मैंने फिर से खेल में वापिसी की उम्मीद ही छोड़ दी थी। लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ में राजयोग मेडिटेशन सीखने के बाद फिर से मेरे सपनों को पंख लग गए। मेरा जुनून फिर से जाग गया। राजयोग से जीवन उमंग-उत्साह से भरपूर हो गया। फिर मैंने संकल्प किया कि मुझे यह जीवन सिर्फ चौका-चूल्हा संभालने के लिए नहीं मिला है। फिर मैंने ठान लिया कुछ करना है और घर पर ही मेहनत शुरू कर दी। राजयोग ज्ञान से मैंने सीखा कि जब हम परमात्मा, के साथ कनेक्ट होते हैं तो हमारा आत्म विश्वास बढ़ जाता है। माइंड की कैपेसिटी बढ़ जाती है। कभी भी अपने पैशन (जुनून) को मत छोड़ो, अपना जज्बा बनाए रखो। सारी दुनिया एक तरफ और हमारा पैशन एक तरफ। जब हम अपने पैशन से प्यार करेंगे तो ही लोग आप से प्यार करेंगे।

3.30 बजे शुरू हो जाती है दिनचर्या

कौर ने बताया कि जब से राजयोग का अभ्यास कर रही हूं तब से मेरी अलसुबह 3.30 बजे से दिनचर्या शुरु हो जाती है। रोज व्यस्त दिनचर्या में से समय निकालकर एक से डेढ़ घंटे मेडिटेशन करती हूं। इस ज्ञान से मैंने सीखा है कि जब हम किसी व्यक्ति से कनेक्ट (प्यार, अटैचमेंट) होते हैं तो ही लाइफ में दुख ही आता है। लेकिन जितना परमात्मा की छत्रछाया में, उनके साथ, उनकी यादों में अपने समय को बिताते हैं तो हर पाल असीम शांति, आनंद, सुकून का अहसास होता है। ऐसा लगता है कि हमारे ऊपर सदा परमात्मा का वरदानी हाथ सिर पर है। इसी ताकत, भरोसे और संबल के बल पर मैंने दोबारा खेल में कमबैक किया। फिर मैंने डाइट फॉलो करके वजन कम किया।

बचपन से ही था खेलों की तरफ झुकाव

चरनजीत कौर ने बताया कि बचपन से ही उनका खेलों कि तरफ झुकाव था। सरकारी स्कूल पटियाला में पढ़ाई के दौरान जब डॉक्टर को दिखाया तो उन्होंने बेटी को खेलने का सुझाव दिया। फिर मैं हर खेल में बचपन से ही हिस्सा लेने लगी। लेकिन मुझे स्कूल की तरफ से होने बाली किसी भी खेल प्रतियोगिता में टीचर लेकर नहीं जाते थे। हर बार कहते थे कि अगली बार लेकर चलेंगे। तब मन को बड़ी ठेस पहुंचती थी। लेकिन मैंने हार नहीं मानी और बैडमिंटन पर फोकस करना शुरु कर दिया। फिर भी मुझे यही सुनने को मिलता कि यह क्या खेलेगी उस समय बड़ा दुख होता था। लेकिन कभी भी खुद को कमजोर नहीं होने दिया।

ध्यान से फोकस बढ़ा

कौर ने कहा कि जब मैं नियमित सेवाकेंद्र जाने लगी तो लोगों ने रोका कि तुम वहां जाना छोड़ दो। पति को भी भड़काया कि अपनी पत्नी को वहां जाने से रोको। लेकिन मेडिटेशन से मुझे असीम शांति मिलती, धीरे-धीरे मन मजबूत हो गया। तमाम सवालों के जवाब सात दिन के राजयोग कोर्स में मिल गए तो मैंने निश्चय कर लिया था कि रोज सेवाकेंद्र जाना है।

बेटे को भी है खेलने का शौक

जब ग्राउंड में प्रैक्टिस करने जाती थी तो एक सीनियर खिलाड़ी मिले। उस समय मुझे पैरा गेम्स के बारे में पता चला। फिर मैंने पैरा गेम्स में अप्लाई किया। जहां मुझे सफलता मिलनी शुरु हो गई तो विश्वास बड़ा और मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। स्नातक की पढ़ाई वूमैन कॉलेज पटियाला से की। पढ़ाई के साथ में खेल को भी जारी रखा और विश्वास बढ़ता गया। शादी के बाद वह दिल्ली आ गईं, लेकिन खेलना नहीं छोड़ा। चरनजीत को पति समीर का भी पूरा साथ मिला। चरनजीत का 12 वर्षीय एक बेटा भी है गुरमेहर, जिसे भी खेलने का शौक है। लॉकडाउन में दिल्ली में घर पर ही आठ घंटे प्रैक्टिस करती थीं।

ओलंपिक में खेलने का सपना

बैडमिंटन चरनजीत की जान है। उनका सपना है कि अब ओलंपिक में खेलें, जिसके लिए पूरी लगन से मेहनत कर रही हैं। मैं पूरी तरह से शाकाहारी हूं और अपनी डाइट में दूध, नट्स, प्रोटीन, केला आदि लेती हूं। मेरा युवाओं से आह्वान है कि अध्यात्म से जुड़ें। जीवन में अध्यात्म के समावेश से नई ऊर्जा मिलती है। हम अपनी शक्तियों को सही तरीके से पहचान पाते हैं। मन पावरफुल हो जाता है। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर सिखाए जाने वाले राजयोग मेडिटेशन कोर्स को समझने का एक बार अवश्य प्रयास करें। यदि कुछ समझ न आए तो सौ बार प्रश्न करें।

चरनजीत के नाम पदक

- **वर्ष 2016:** हरियाणा में आयोजित 16वीं सीनियर नेशनल पैरा बैडमिंटन चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक।
- **वर्ष 2018:** वाराणसी में आयोजित नेशनल पैरा बैडमिंटन चैंपियनशिप में कांस्य पदक।
- **वर्ष 2019:** रुद्रपुर में आयोजित थर्ड नेशनल पैरा बैडमिंटन चैंपियनशिप में रजत पदक।
- **वर्ष 2019:** थाईलैंड में आयोजित ओपन पैरा बैडमिंटन टूर्नामेंट में पार्टिसिपेट किया।

वर्ष 2021 की उपलब्धियां

- दुबई में आयोजित थर्ड पैरा बैडमिंटन टूर्नामेंट में कांस्य पदक।
- मार्च-अप्रैल में दुबई पैरा बैडमिंटन इंटरनेशनल 2021 में एसएल-3 श्रेणी में एकल में तीसरा स्थान, कांस्य प्राप्त किया।
- सितंबर में केरल के त्रिशूर में आयोजित प्रथम पैरा मास्टर्स नेशनल इंडोर गेम्स में एकल में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।
- नवंबर में युगांडा में आयोजित पैरा बैडमिंटन इंटरनेशनल कपल, एसएल-3 श्रेणी में तीसरा स्थान प्राप्त किया। दो कांस्य प्राप्त किए।
- दिसंबर में भुवनेश्वर, ओडिशा में आयोजित चौथी राष्ट्रीय पैरा बैडमिंटन चैम्पियनशिप 2020 एकल में कांस्य पदक प्राप्त किया।

योग का प्रयोग

बचने की आस छोड़ी, योग की शक्ति से जिंदगी फिर मुस्कुराई

स्टोरी 02

शिव आमंत्रण, आगरा (उप्र)।

आगरा के शिक्षक ब्रह्मचारी बीके हरिदत्त शास्त्री ने योग का प्रयोग कर पैंक्रियाज की बीमारी को किया ठीक

योग में वह शक्ति होती है जो तन के साथ मन की समस्त बीमारियों को दूर कर देता है। आगरा के 57 वर्षीय शिक्षक ब्रह्मचारी बीके हरिदत्त शास्त्री ने योग की शक्ति का जीवन में प्रयोग कर यह साबित कर दिया कि मन में अटल निश्चय, दृढ़ संकल्प और परमात्मा में विश्वास हो तो कुछ भी असंभव नहीं है।

शिव आमंत्रण से विशेष चर्चा में योग के प्रयोग के अनुभव सांझा करते हुए शिक्षक शास्त्री ने बताया कि 8 फरवरी 2017 को पता चला कि पैंक्रियाज की बीमारी है। कई डॉक्टर्स को दिखाया, चार-पांच हॉस्पिटल में एडमिट भी रहा। तीन-चार माह तक अन्न का एक दाना नहीं खाया, सिर्फ ड्रिप पर रहा। कमजोरी इतनी आ गई थी कि जमीन से नहीं उठ पाता था। सब तरफ से निराशा ही मिली। रिश्तेदार और समाज के लोगों ने बचने की उम्मीद छोड़ दी थी। लेकिन राजयोग की शक्ति से फिर से जीवन में बहार आ गई। चूंकि मैं वर्ष 1988 से 21 साल की उम्र से राजयोग का अभ्यास कर रहा था। इस पर अपनी बीमारी पर योग की शक्ति का प्रयोग करना शुरू किया। पांच महीने योग के प्रयोग से बीमारी पूरी तरह ठीक हो गई और आज मैं स्वस्थ जिंदगी जी रहा हूं। जीवन आनंदर से भरपूर है। बता दें कि आपकी तीन आध्यात्मिक गीतों की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 500 से अधिक गीत लिख चुके हैं।

शिक्षक ने बीमारी पर ऐसे किया योग का प्रयोग...

ब्रह्मचारी शास्त्री ने बताया कि मैं प्रतिदिन अमृतवेला ब्रह्ममुहूर्त में 3.30 बजे से एक घंटा राजयोग ध्यान करता था। इसमें विजुलाइज करता कि पूरे शरीर पर परमधाम से निरन्तर शिव बाबा की लाल-लाल किरणें पड़ रही हैं। मेरा आभामंडल प्रकाश की किरणों से भरपूर हो गया है। हर समय संकल्प करता कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान आत्मा हूं। मैं दैवीकुल की आत्मा हूं। देवताओं की कभी हार हो ही नहीं सकती। मैं कल्प-कल्प की विजयी आत्मा हूं। मैं इस बीमारी से मुक्त, स्वस्थ आत्मा हूं। परमात्मा का वरदानी हाथ सदा मेरे सिर पर है। इस तरह धीरे-धीरे मेरी बीमारी ठीक होती गई। पांच महीने योग के प्रयोग से मैं पूर्णत: स्वस्थ हो गया।

22 गांव में रामायण पढ़ने के लिए था प्रसिद्ध

ब्राह्मण परिवार में जन्म के कारण भक्ति भाव के संस्कार विरासत में मिले। बचपन से ही में शिवभक्त रहा। साथ ही रामायण पाठ के लिए मैं 22 गांवों में विख्यात था। लोग रामायण पाठ कराने के लिए मुझे विशेष रुप से बुलाते थे। ब्रह्मचारी शास्त्री ने बताया कि जुलाई 1988 में मैं ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ा। पिछले 37 साल से राजयोग ध्यान कर रहा हूं। साथ ही स्वयं के हाथ का परमात्मा की याद में बना बिना प्याज-लहसुन का शुद्ध, सात्विक भोजन करता हूं। जीवन में कई उतार-चढ़ाव आए लेकिन कभी मन डगमग नहीं हुआ। बचपन से ही मन में सपना और दृढ़ संकल्प था कि ब्रह्मचारी जीवन ही जीना है। समाज के लिए कुछ करना है। हाथरस क्षेत्र की निदेशिका आदरणीया बीके सीता दीदी के सान्निध्य में मैंने राजयोग कोर्स किया।

और तलाश हो गई पूरी

रामायण में एक चौपाई है- बिनु पग चलै सुनै बिनु काना। कर बिन कर्म करै विधि नाना।। जब भी मैं इसे पढ़ता तो मन में अनेक सवाल आते थे कि आखिर वह ईश्वर कौन है जो बिना पैर के चलता, बिना कान के सुनता है फिर भी सारे संसार का मालिक है और सबकुछ करता है। क्योंकि भक्ति में हम जिन देवी-देवताओं को पूजते हैं उन्होंने भी किसी को पूजा है। लेकिन जब ब्रह्माकुमारीज़ में आकर परमात्मा का सत्य परिचय लिया तो मेरी आंखें खुल गईं। जिस ईश्वर, परमात्मा की तलाश थी वह पूरी हो गई। जब पहले दिन सेवाकेंद्र पर आत्मा-परमात्मा का चित्र दिखाया तो दस मिनट तक परमधाम में जाने की अनुभूति हुई।

संकल्प शक्ति

कैंसर और कोरोना का डबल अटैक, संकल्प शक्ति से दोनों को हराया

स्टोरी 03

शिव आमंत्रण, पालनपुर (गुजरात)।

गुजरात के पालनपुर छापी की सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी रेणुका दीदी ने पेश की मिसाल

तीन साल की उम्र से अध्यात्म के पथ पर चल रहीं बालब्रह्मचारी, राजयोगिनी रेणुका दीदी का जीवन संकल्प शक्ति की जीती जागती मिसाल है। जिस उम्र में बच्चे खेल-कूद में अपना जीवन बिताते हैं उस उम्र में आपने ध्यान-साधना को अपनाया। बचपन से संयमित जीवन जीने वाली 53 वर्षीय राजयोगिनी रेणुका दीदी के जीवन में वर्ष 2020 में ऐसा समय आया जिसमें साधारण इंसान हताश, निराश होकर तनावग्रस्त हो जाता है। लेकिन आपने परमात्मा की मदद और संकल्प शक्ति के बल पर एक नहीं बल्कि दो गंभीर बीमारियों पर विजय प्राप्त कर मिसाल पेश की है। वर्तमान में आप गुजरात के पालनपुर, छापी सेवाकेंद्र की प्रभारी के रूप में सेवाएं दे रही हैं। आपकी दो बहनें और एक भाई भी समर्पित रूप से सेवाएं दे रहे हैं।

शिव आमंत्रण से विशेष बातचीत में रेणुका दीदी ने बताया कि 16 जुलाई 2020 की शाम। अहमदाबाद की स्टर्लिन हॉस्पिटल। चेकअप के बाद डॉक्टर साथी बहनों के साथ मुझे अंदर बुलाते हैं। जैसे ही वह बताते हैं कि आपको थर्ड स्टेज का ब्रेस्ट कैंसर है तो कुछ पल के लिए कमरे में सन्नाटा छा जाता है। खुद को संभालती हूं और तुरंत शिव बाबा की बात याद आती है बच्ची! तुम चिंता मत करो, मैं बैठा हूं। बाबा की याद से तूफा तोहफा बन जाएंगे। डॉक्टर ने रिपोर्ट देखकर कहा कि तुरंत ऑपरेशन करना पड़ेगा। इसके लिए पहले कोरोना टेस्ट करना होगा। उसी दिन कोरोना टेस्ट हुआ और अगले दिन रिपोर्ट पॉजीटिव आई। अब मुझे एक साथ कोरोना और कैंसर दो गंभीर बीमारियों से जंग जीतना थी। कोरोना के कारण बाद डॉक्टर ने कहा कि आपको हर हाल में हॉस्पिटल में ही एडमिट होना पड़ेगा, क्योंकि आपको डबल बीमारी है।

भोजन की पवित्रता के कारण एडमिट नहीं हुई

मैंने बचपन से कभी भी बाहर का भोजन नहीं किया था। सदा पवित्र, सात्विक भोजन ही किया है जिसे पवित्रता के व्रत का पालन करने वाले लोगों ने बनाया हो। इसलिए डॉक्टर से हॉस्पिटल में एडमिट होने के लिए साफ इनकार कर दिया। प्यारे, मीठे शिव बाबा को याद किया और कहा मैं अपने भोजन के व्रत को नहीं तोड़ सकती हूं चाहे जान चली जाए। इस पर अन्य भाई-बहनों की लंबी समझाइश और बाबा की मदद के बाद डॉक्टर होम आइसोलेशन पर तैयार हो गए। इस दौरान मेरी माताजी, बड़ा भाई और भतीजा भी कोरोना से जंग लड़ रहे थे।

बाबा ने कराया साक्षात्कार

सेवाकेंद्र पर आने के बाद मैंने योग में शिव बाबा से कहा कि मुझे और मेरे लौकिक परिवार को इस पेपर में पास होना है। अब मैं क्या करुं, आप रास्ता बताओ। इस पर जैसे बाबा मेरे सामने आए और सिर पर हाथ रखा तो महसूस किया कि मैं इस दुनिया से दूर कहीं जा रही हूं। बाबा सामने पुष्पक विमान लेकर आए। मुझे बिठाया और उसमें पांच-सात लोग और थे। जिसमें मेरी मां भी थीं। बाबा हम सबके बहुत दूर ले गए। जैसे ही उन्होंने हमें विमान से नीचे उतारा तो सभी छोटे बच्चे बन गए। बाबा ने शक्तियां दीं और महसूस कराया कि अब मुझे कुछ होने वाला नहीं है।

सेवाकेंद्र पर किया योग का प्रयोग

रेणुका दीदी बताती हैं कि छापी सेवाकेंद्र पर आने के बाद मैं 22 दिन होम आइसोलेट रहीं। इस दौरान पहले दिन से ही शाम 6.30 से 7.30 बजे तक रोज एक घंटा राजयोग मेडिटेशन का अपनी बीमारी पर प्रयोग किया। योग में विजुलाइज करती कि मैं विजयी आत्मा हूं। मेरे शरीर पर परमपिता शिव परमात्मा की लाल किरणें पड़ रहीं हैं और मेरा शरीर रोगमुक्त हो रहा है। बाबा की लाल-लाल किरणों से कोरोना के वायरस खत्म हो रहे हैं। कैंसर के वायरस खत्म हो रहे हैं। लगातार 15 दिन के योग के प्रयोग के बाद फिर से कोरोना टेस्ट कराया तो निगेटिव रिपोर्ट आई। साथ ही कैंसर में भी काफी इम्प्रूवमेंट हुआ। यह देखकर डॉक्टर अचंभित रह गए। वह बोले कि यह किसी चमत्कार से कम नहीं है। मैंने अपने जीवन में पहला केस देखा है कि थर्ड स्टेज का कैंसर बिना ऑपरेशन के बढ़ने के बजाय परसेंटेज कम हो गया।

डेढ़ साल में पूरी तरह से कैंसर मुक्त हुई

आमतौर पर रेडिएशन में लोगों को बॉडी में बहुत जलन होती है और शरीर में काले धब्बे पड़ जाते हैं लेकिन बाबा का कमाल है कि मुझे बिल्कुल भी जलन नहीं हुई और न ही काला धब्बा हुआ। साथ ही ऑपरेशन के बाद भी किसी तरह की कमजोरी महसूस नहीं हुई। लगातार योग के प्रयोग और परमात्मा की दुआ से मैं डेढ़ साल के अंदर पूरी तरह से कैंसर से मुक्त हो गई। अब पूरी तरह से स्वस्थ हूं।

दीदी के जीवन की सीख...

मेरा मानना है कि जीवन में कितनी भी बड़ी मुश्किल आ जाए। समस्याओं का पहाड़ टूट पड़े लेकिन खुद पर और परमात्मा पर विश्वास रखें। सबकुछ उसे अर्पण कर दें। साक्षी भाव से जीवन में आने वाली समस्याओं को देखें फिर आपके जीवन के तूफा, तोहफा में बदल जाएंगे। मन को कभी भी कमजोर नहीं होने दें। हम परमात्मा के बच्चे हैं। संकल्प शक्ति के बल पर हम बड़ी से बड़ी बीमारी को ठीक कर सकते हैं। जीवन में आई कठिन आपदा में भी मैंने कभी अपनी खुशी को नहीं छोड़ा। आशा, उमंग-उत्साह और परमात्मा की छत्रछाया से सब आसान हो गया।

खुशनुमा जीवन का पासवर्ड

योग से बीपी ठीक हुआ, चिड़चिड़ापन की जगह जिंदगी बनी खुशमिजाज

स्टोरी 04

शिव आमंत्रण, अजमेर (राजस्थान)।

रिटायर मेडिकल सुपरिटेंडेंट आशारानी चंदानी का बदला हुआ जीवन देखकर लोग करते हैं तारीफ

आध्यात्मिक ज्ञान और सहज राजयोग कैसे हमारी जीवनशैली को बदल देता है इसका उदाहरण है सेवानिवृत्त मेडिकल सुपरिटेंडेंट आशारानी चंदानी का जीवन। राजस्थान के अजमेर निवासी चंदानी बतातीं हैं कि मुझे बहुत गुस्सा आता था। चिड़चिड़ा स्वभाव था। इससे जीवनभर मेरे ऑफिस का स्टाफ परेशान रहा। घर में भी बात-बात पर गुस्सा आ जाता था। लेकिन एक दिन मेरी दोस्त ने ब्रह्माकुमारीज़ के बारे में बताया।

फिर मैंने अपने नजदीकी सेवाकेंद्र पर जाकर सात दिन का राजयोग मेडिटेशन का कोर्स किया। कोर्स के दौरान ही मेरे स्वभाव में काफी अंदर आ गया। मुझे सेवाकेंद्र पर पहले ही दिन से सुकून और गहन शांति की अनुभूति हुई। कोर्स करते हुए तीन दिन ही हुए थे कि एक दिन मेडिटेशन रूम में योग कर रही थी। उस समय मुझे ब्रह्मा बाबा का साक्षात्कार हुआ। बाबा एक बड़े से पेड़ के नीचे सफेद कपड़ों में बहुत ही दिव्य रूप में दिख रखे थे। बाबा की लाइट इतनी तेज थी कि मेरी आंखें चकाचौंध हो गईं। यह घटना मैंने दीदी को बताई तो वह बोलीं कि आपको बाबा का साक्षात्कार हुआ है।

मेडिटेशन बना जीवन का हिस्सा

चंदानी ने बताया कि आज मुझे राजयोग मेडिटेशन, मुरली और शिव बाबा से इतना अटैचमेंट हो गया है कि बाबा की याद बिना एक दिन भी नहीं रह पाती हूं। रोज सबेरे 3.30 बजे से एक घंटा बाबा को याद करती हूं। शाम को भी योग करती हूं और रोजाना परमात्मा के महावाक्य सुनती हूं। सारे दिन बीच-बीच में भी बाबा को हर पाल याद करती हूं। मेरा लोगों को यही संदेश है कि एक बार अवश्य अपने जीवन में राजयोग ज्ञान को समझकर देखें। आखिर राजयोग क्या है? इसके क्या फायदे हैं? इसे कैसे कर सकते हैं? हमारे लिए क्यों जरुरी है? राजयोग से मन कैसे शक्तिशाली होता है? आपको अपने जीवन से खुद जवाब मिल जाएगा। मन की बीमारी का एकमात्र इलाज राजयोग में ही समाया है।

बीपी हो गया नार्मल, परिवार में बिखरीं खुशियां

राजयोग से जहां मेरा चिड़चिड़ापन दूर हो गया, वहीं मैं पहले की अपेक्षा बहुत खुश रहने लगी। इससे बीपी ठीक हो गया। घर का माहौल भी अच्छा हो गया। पति, बच्चे सब खुश हो गई। मुझ में आए बदलाव को देखकर मेरे परिवार वाले और पड़ोसी भी तारीफ करते हैं कि आशारानी का जीवन कितना बदल गया है। मेरे घर में अब खुशियां ही खुशियां आ गईं हैं। अब मुझे छोटी-बड़ी कोई भी बात हो लेकिन गुस्सा नहीं आता है। मन सदा शांत रहता है। इसका श्रेय मैं प्यारे बाबा को देती हूं। अब तो दिल यही गाता कि दिल कहे बाबा तेरा शुक्रिया, तूने ही भाग्य बनाया है।

हौसले की उड़ान

राजयोग से छह माह में थर्ड स्टेज का कैंसर हुआ ठीक, डॉक्टर रह गए हैरान

स्टोरी 05

शिव आमंत्रण, सोल्हापुर (महाराष्ट्र)।

सोल्हापुर महाराष्ट्र की बीके पूनम से अपने बुलंद हौसले, परमात्म मदद और योग के प्रयोग से कैंसर जैसी असाध्य बीमारी को मात देकर डॉक्टरों के लिए हैरान कर दिया। योग के प्रयोग से आपने मात्र छह महीने के अंदर कैंसर से जंग जीत ली। आज आप पूरी तरह से स्वस्थ जिंदगी जी रही हैं।

बीके पूनम ने बताया कि सात साल पहले ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ी। 2018 में माउंट आबू में परमात्म मिलन शिविर से आने के बाद मुझे चेस्ट में कुछ गांठ जैसा महसूस हुआ। डॉक्टर्स को चेक कराया तो रिपोर्ट में थर्ड स्टेज का कैंसर आया। डॉक्टर ने ऑपरेशन करने के लिए कहा। ऑपरेशन के पहले बाबा को याद किया कि आपको ही सर्जन बनकर ऑपरेशन करना है तो उस दौरान मुझे लाइट ही लाइट दिखी। 24 फरवरी 2018 को ऑपरेशन हुआ। बाबा का कमाल है कि बिल्कुल भी दर्द का एहसास नहीं हुआ। इस दौरान 24 कीमो और 12 बार रेडिएशन हुआ। कीमो के दौरान सभी को असहनीय तकलीफ होती है लेकिन मुझे न तकलीफ हुई और न ही बाल झड़े। यह देखकर डॉक्टर भी हैरान रह गए कि यह कैसे संभव है।

बीमारी में ऐसे किया मेडिटेशन

बीके पूनम बतातीं हैं कि जैसे ही मुझे कैंसर के बारे में पता चला तो इलाज के साथ-साथ अपने ऊपर योग का भी प्रयोग करती रही। इससे कैंसर जैसी असाध्य बीमारी कैसे सदा के लिए दूर चली गई, पता ही नहीं चला। जब मैं राजयोग करने बैठती तो सबसे पहले अपने संकल्पों को बाहरी दुनिया से हटाकर खुद पर केंद्रित करती। इसके बाद खुद को आत्मा समझकर परमधाम के निवासी परमात्मा शिव बाबा को याद करती। योग में विजुलाइज करती कि परमात्मा शिव बाबा की परम पवित्र लाल किरणें मेरे ऊपर पड़ रही हैं... मेरी बीमारी ठीक हो रही है... कैंसर की कोशिकाएं बाबा की शक्ति से नष्ट हो रही हैं... शरीर में नई कोशिकाओं का जन्म हो रहा है... बाबा की शक्तिशाली किरणों से मेरा शरीर चार्ज हो गया है... मैं पूरी तरह से स्वस्थ हो गई हूं... सर्वशक्तिवान की संतान मैं आत्मा मास्टर सर्वशक्तिमान हूं... मेरे रक्षक मेरे बाबा हैं... मैं बाबा की छत्रछाया में पल रही हूं... बाबा का वरदानी हाथ सदा मेरे सिर पर है... सर्वशक्तियों के सागर, सर्वगुणों के भंडार बाबा ने मेरा सारा दर्द दूर कर दिया है... मैं बाबा की गोद में बैठकर अद्भुत, अनुपम शांति की अनुभूति कर रही हूं... इस तरह संकल्प करते हुए जब मैं योग में बैठती तो बाबा के प्यार में खो जाती थी। मुझे इस दुनिया का आभास ही नहीं रहता था। इस तरह छह महीनों के अभ्यास से ही कैंसर पूरी तरह से जड़ से समाप्त हो गया।

सोल्हापुर महाराष्ट्र की बीके पूनम ने संकल्प शक्ति से मेडिकल साइंस को हराया

खुशी का मंत्र

तीन दिन के ज्ञान से छूटा नशा

राजयोग से जीवन में आई खुशहाली

स्टोरी 06

जबलपुर निवासी रेडियोलॉजिस्ट डॉ. लखन सिंह बैस का परिवर्तनकारी अनुभव

शिव आमंत्रण, जबलपुर (मप्र)।

वर्ष 2012 में पहली बार माउंट आबू स्थित ज्ञान सरोवर अकादमी में ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल विंग की ओर से आयोजित डॉक्टर्स कॉन्फ्रेंस में भाग लिया। यहां आने से मात्र दिन दिन के अंदर मेरे जीवन की दशा और दिशा बदल गई। इसके पहले तक मैं सिगरेट पीता था और कभी-कभी शराब भी लेता था। लेकिन कॉन्फ्रेंस में पहले दिन बीके ऊषा दीदी ने परमात्मा का सत्य परिचय के बारे में बताया। यह सुनकर मुझे पूरा विश्वास हो गया कि यही सत्य ज्ञान है। फिर मैंने बाकी के दो दिन सभी सेशन अटेंड किए। तीन दिन अलग-अलग सत्रों में ज्ञान सुनकर मेरी सोच बदल गई। मैंने वहीं संकल्प किया कि अब कभी जीवन में किसी भी तरह के नशे को हाथ नहीं लगाऊंगा। साथ ही हर बात में सकारात्मक पहलू देखने लगा।

यह कहना है मप्र के जबलपुर निवासी 56 वर्षीय रेडियोलॉजिस्ट डॉ. लखन सिंह बैस का। आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग मेडिटेशन से आपका जीवन ऐसा बदला कि आज हर कोई आपका मुरीद है। सदा मुस्कुराता चेहरा आपके ज्ञान-ध्यान की गहराई को बयां करता है।

शिव आमंत्रण से चर्चा में डॉ. बैस ने अपने जीवन के अनुछुए पहलुओं को सांझा किए। माउंट आबू से आकर मैंने और मेरी धर्मपत्नी ने राजयोग मेडिटेशन का कोर्स किया। इसके बाद दीदी द्वारा बताए गईं सभी मर्यादाओं का पालन शुरू कर दिया। सबसे बड़ी बात मेरा मरीजों के प्रति रवैया पहले की अपेक्षा ज्यादा प्रेमपूर्ण, स्नेहपूर्ण और अपनत्व वाला हो गया। क्लीनिक पर आने वाले लोग कहते हैं कि यहां आकर शांति की अनुभूति होती है। बता दें कि आप पूर्व में जबलपुर आईएमए के सचिव भी रह चुके हैं।

किसी भी परिस्थिति में नहीं होता है दुख का एहसास

डॉ. बैस ने बताया कि राजयोग के अभ्यास से अब मन इतना सशक्त और शक्तिशाली हो गया है कि जीवन में जब भी कोई परिस्थिति आती है तो दुख का एहसास नहीं होता है। जीवन तो एक खेल जैसा लगने लगा है। दुख हो या सुख सभी में एकसमान रहता हूं। मन सदा खुशी से भरपूर रहता है। मेरे क्लीनिक पर आने वाले मरीज संतुष्ट होकर जाते हैं। जीवन बहुत आनंद में गुजर रहा है। अब मन में प्रश्न ही नहीं आता है कि क्या होगा? कैसे होगा? इन सभी प्रश्नों से दूर हो गया हूं। जीवन से सारा डर दूर हो गया है।

दस साल से पति-पत्नी दोनों चल रहे हैं संयम के मार्ग पर

पहले जहां मैं देर तक सोता रहता था वहीं पिछले दस साल से अलसुबह 3.30 बजे से 4 बजे के बीच दिनचर्या शुरू हो जाती है। सबसे पहले एक घंटा राजयोग ध्यान करता हूं। इसके बाद परमात्मा के महावाक्य सुनता हूं। सारे दिन बीच-बीच में मुरली (परमात्मा के महावाक्य) रिवीजन करता हूं। अब सारे दिन प्रयास करता हूं कि ज्यादा से ज्यादा समय परमात्मा शिव बाबा की याद में व्यतीत हो। पिछले दस साल से हम दोनों पति-पत्नी संयम के पथ पर चलते हुए राजयोग जीवनशैली से जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

परमात्म शक्ति

गैंग्रीन से पैर कटा, छह महीने दर्द में गुजरे, परमात्मा ने दिया नया जीवन

स्टोरी 07

अहमदाबाद के ताराचंद टेकवानी का प्रेरणादायी अनुभव, बोले ये जीवन ईश्वर की

शिव आमंत्रण, अहमदाबाद (गुजरात)

वर्ष 2017 में बांए पैर में दर्द हुआ तो डॉक्टर को दिखाया। चेकअप के बाद उन्होंने बताया कि आपको गैंग्रीन है, तुरंत पांव की अंगुलियां काटनी पड़ेंगी। कुछ दिन बाद फिर इन्फेक्शन बढ़ गया और ऑपरेशन कर पांच इंच बायां पांव काटना पड़ा। डॉक्टरों ने कहा था कि शायद आपका बचना मुश्किल है। क्योंकि पांव से बहुत खून बहता था। ऑपरेशन के बाद भी कोई आराम नहीं हुआ। छह महीने दिन-रात इतनी असहनीय पीड़ा रही और दर्द में गुजरे जिसे मैं बता नहीं सकता हूं। वह पल याद कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। यहां तक कि मेरे पांव से बदबू आने लगी थी। लोग कमरे में नहीं आते थे। मैं बहुत रोता रहता था। एक दिन दादियों और बड़ी दीदियों ने मुझे आशीर्वाद दिया कि आप जल्द ठीक हो जाओगे। दादी बोलीं- बाबा के बच्चे रोते नहीं हैं। उस दिन के बाद कितना भी दर्द रहा लेकिन मेरी आंख से आसूं नहीं निकले। परमात्मा की शक्ति, राजयोग मेडिटेशन और ब्रह्माकुमारी बहनों की दुआ का कमाल है कि आज सामान्य जिंदगी जी रहा हूं।

यह कहना है गुजरात अहमदाबाद के 69 वर्षीय ताराचंद टेकवानी का। शिव आमंत्रण से विशेष बातचीत में उन्होंने अपने जीवन के कड़वे अनुभव बताते हुए कहा कि गैंग्रीन की बीमारी मेरे जीवन का सबसे दुखद और दर्दनाक समय रहा। इस बीच सबसे बड़ी मदद और शक्ति थी तो परमात्मा शिव बाबा की। जिनकी शक्ति, साहस और भरोसे के बल पर मैंने यह वक्त निकाला। जब-जब मन कमजोर पड़ता या नकारात्मक विचार आते तो उसी दिन सुबह मुरली क्लास (परमात्म महावाक्य) में बाबा कहते कि बच्चे! शरीर की बीमारी कर्मों का हिसाब-किताब है। इसे खुशी-खुशी पूरा करना है। बाबा की याद में रहेंगे तो बाबा की मदद महसूस होती रहेगी। बाबा की मदद और शक्ति के भरोसे मेरे दिन गुजरते गए। सुबह-शाम रोज राजयोग मेडिटेशन करता कि बाबा की शक्तिशाली किरणें मेरे पैर पर पड़ रही हैं और दर्द दूर होता जा रहा है। इस तरह धीरे-धीरे दर्द दूर हो गया। अब मैं खुद स्कूटर चलाकर रोज सेवाकेंद्र जाता हूं और ज्ञान-योग करता हूं।

बीमारी के बाद भगवान में निश्चय बढ़ गया

टेकवानी ने बताया कि मैं वर्ष 2000 से ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ा हूं और राजयोग का अभ्यास कर रहा हूं। लेकिन जब वर्ष 2017 में गैंग्रीन हुआ तो मेरी परमात्मा और इस ज्ञान में और निश्चय बढ़ गया। क्योंकि यह वह वक्त था जब मेरे समक्ष ज्ञान और योग की परीक्षा थी। सबसे बड़ी बात यह रही कि जिस दिन मेरा मन कमजोर होता उसी दिन बाबा मेरा हौसला बढ़ा देते थे। मेरी धर्मपत्नी और बहू ने बहुत सेवा की। मुझे इस पीड़ा से बाहर निकालने में प्यारे बाबा, दीदियों और परिवार के सदस्यों का दिल से शुक्रगुजार हूं। खुद को भाग्यशाली समझता हूं कि मेरे सिर पर परमात्मा का वरदानी हाथ है। परमात्मा की दुआएं मेरे साथ हैं।

स्नेह की शक्ति

दीदियों के स्नेह-प्यार से जीवन में फिर से आईं खुशियां

स्टोरी 08

मप्र के बीना की रेखा पंजाबी जवान बेटे की मौत के सदमे में डूबी, योग से मिली नई राह...

शिव आमंत्रण, बीना/सागर (मप्र)।

इंजीनियरिंग के बाद बड़े बेटे ने पुणे में जॉब शुरू की। उसका सपना था कि मां पहली सैलरी मैं आपको दूंगा। सैलरी मिलने पर वह पहली बार घर आया था। परिवार में खुशियों का माहौल था। दूसरे दिन होली (19 मार्च 2011) पर बेटा बाइक से दोस्तों के साथ घूमने गया था और दोपहर में 12 बजे एक्सीडेंट हो गया और उसे बचा नहीं सके। 24 साल के जवान बेटे को खोने का गम मेरे अंतर्मन में समां गया। दिन-रात उसे याद करके मेरी हालत ऐसी हो गई थी जैसे जिंदा लाश। जीवन जैसे बोझ लगने लगा था। जीने की कोई वजह नजर नहीं आ रही थी। खुद की सुध-बुध भी नहीं रहती थी। घर वाले भोजन करा देते तो खा लेती थी, नहीं तो ऐसे ही बैठी रहती। मेरी हालत देखकर पति कई सत्संगों में ले गए लेकिन कोई सुधार नहीं हुआ। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र से जुड़ने के बाद उस दर्द की भूल सकी और आज खुशहाल जीवन जी रही हूं।

यह कहना है मप्र के बीना निवासी 57 वर्षीय गृहिणी रेखा पंजाबी का। पंजाबी ने शिव आमंत्रण से चर्चा में बताया कि एक दिन मेरी भाभी नागपुर से आईं और उन्होंने मुझे सेवाकेंद्र जाने की प्रेरणा दी। फिर पति मुझे रोज दोपहर में सेवाकेंद्र पर छोड़ जाते थे। सेंटर पर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सरोज दीदी, बीके जानकी दीदी, बीके सरस्वती दीदी ने मुझे बहुत स्नेह-प्यार किया। दीदियां यहां तक मेरी चोटी करतीं, मुझे अपने हाथ से खाना खिलातीं थीं। सभी दीदियों ने बहुत स्नेह-प्यार दिया। लेकिन मैं घंटों तक ऐसी ही बैठी रहती थी। दीदियां कुछ पूछतीं तो मैं जवाब भी नहीं देती थीं। सिर्फ बेटे को ही याद करती रहती थीं। कई महीने इसी तरह गुजर गए।

मेडिटेशन से भूल गई सारा दुख

दीदियों की पालना की बदौलत कुछ महीनों बाद मैंने ज्ञान सुनना शुरू किया। फिर राजयोग कोर्स को समझा और मेडिटेशन सीखा। जब मेडिटेशन करने लगी तो धीरे-धीरे मेरा दुख दूर होने लगा। कुछ ही महीने के अभ्यास से मैं पूरी तरह से बेटे के दुख से उबर गई। रोना बंद हो गया। परमपिता परमात्मा शिव बाबा की शक्ति से मेरी जिंदगी निर्मल हो गई। दीदियों ने मुझे जब कर्मफल, पूर्व जन्मों की कहानी, आत्मा- परमात्मा का सत्य परिचय के बारे में बताया तो मैं उस घटना को पूरी तरह से भूल गई। कुछ समय बाद योग में एक दिन बाबा ने मुझे टचिंग दी कि बच्चे चिंता क्यों करते हो, मैं बैठा हूं।

हर पल बाबा की मदद का होता है एहसास

अब तो यह जीवन प्यारे शिव बाबा की अमानत है। रोज अमृतवेला, ब्रह्ममुहूर्त में बाबा का ध्यान करती हूं। रोज मुरली पढ़ती हूं। अब तो हर पल बाबा की मदद और साथ का अनुभव होता है। ऐसा महसूस होता है कि जैसे सदा परमात्मा का वरदानी हाथ मेरे सिर पर है। मेरा बदला हुआ जीवन देखकर पति और बच्चे सभी बेहद खुश रहते हैं क्योंकि सभी ने आस ही छोड़ दी थी कि मेरे जीवन में फिर से खुशियां आएंगी। मुझे नवजीवन देने के लिए बीना की सभी ब्रह्माकुमारी दीदियों और शिव बाबा का दिल से शुक्रिया।

ब्रह्मा बाबा बने रक्षक

उग्रवादियों के हमले के पूर्व सफेद वस्त्रों में आए बाबा ने किया अलर्ट

स्टोरी 09

- बाबा के अलर्ट के बाद पोजीशन ली और कुछ सेकंड बाद हो गया था हमला
- कुपवाड़ा में पोस्टिंग के दौरान सेवानिवृत्त जवान की सत्य घटना

शिव आमंत्रण, कठुआ (जम्मू कश्मीर)।

मैं भारतीय सेना में वर्ष 2000 में 18 आरआर बटालियन में कुपवाड़ा में तैनात था। एक दिन ड्यूटी के दौरान सुबह के 3.10 बज रहे थे। थोड़ी झपकी का एहसास होने पर मैंने चाय बनाने की सोची। तभी कुछ ही पल में बटालियन की तरफ से सफेद वस्त्रों में एक व्यक्ति आया। साहब को दिखाने के लिए हम अलर्ट हो गए और पोजीशन ले ली। पोजीशन लेते ही कुछ ही सेकंड में 14 उग्रवादियों ने अटैक कर दिया। हमारे बीच करीब ढाई मिनट तक अंधाधुंध फायरिंग हुई। बाद में वह भाग खड़े हुए। इस घटना के दूसरे दिन मैंने अपने मेजर साहब से पूछा कि साहब आप रात में सफेद कपड़ों में आए थे तो उन्होंने कहा कि मैं क्यों आऊंगा। अगर में चेक करने भी आता तो वर्दी में आता। इस पर मुझे पूरा विश्वास हो गया कि ब्रह्मा बाबा ही हमें अलर्ट करने आए थे। इस तरह हमारी जान बच गई।

यह कहना है जम्मू-कश्मीर के कठुआ जिले के बनी तहसील निवासी 56 वर्षीय भारतीय सेना से सेवानिवृत्त जवान ब्रह्माकुमार मेहर सिंह का। विशेष चर्चा में पूर्व सैनिक मेहर सिंह ने अपने जीवन में राजयोग मेडिटेशन और परमात्म मदद के अनेक अनुभव सांझा किए। इस घटना के वक्त मुझे राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करते हुए नौ साल हो गए थे। साथ ही अमृतवेला रोज शिव बाबा से योग लगाता था। उस दिन प्यारे बाबा रक्षक बनकर आए और मुझे अलर्ट होने की प्रेरणा देकर अव्यक्त हो गए।

ब्रह्मा बाबा को देखते ही पहचान लिया

मेहर सिंह ने बताया कि 18 साल की उम्र में सेना में भर्ती हो गया था। वर्ष 1991 की बात है जब मैं 23 साल का था तो लखनऊ में पोस्टिंग के दौरान मेरा दोस्त जो ब्रह्माकुमारीज से जुड़ा था, वह एक दिन आश्रम लेकर गया। वहां राजयोगिनी सती दादी से मुलाकात हुई। उन्होंने जब आत्मा-परमात्मा का ज्ञान सुनाया तो अच्छा लगा। सोचा इस ज्ञान को एक बार गहराई से समझना चाहिए। फिर दादी ने ब्रह्मा बाबा की फोटो दिखाते हुए कहा कि इनको जानते हो तो मैंने कहा जी दादी जानता हूं। पुणे में इनकी दुकान हैं मैंने सामान लिया है। यह सुनकर दादी अचंभित रह गईं। मैं अपनी जिद पर अड़ गया कि मैं इन बाबा को जानता हूं। चूंकि पहले सपने में कई बार मुझे ब्रह्मा बाबा दिखे थे इसलिए देखते ही मैं पहचान गया कि इनको पहले देखा है।

इस तरह मैंने सात दिन का राजयोग कोर्स किया। इसके बाद नियमित रूप से सेंटर जाने लगा। एक दिन दादी ने कहा कि ऐसा कोई जरूरी नहीं है कि रोज आना है। इस पर मैं तीन महीने गया ही नहीं। फिर एक दिन दादीजी अन्य भाई-बहनों के साथ बटालियन पहुंचीं और मुझे सेंटर बुलाया।

योग-साधना के 18वें दिन हुआ आत्म स्वरूप का साक्षात्कार

ब्रह्माकुमार मेहर सिंह ने बताया कि जैसे-जैसे समय बढ़ता जा रहा था तो मेरी योग-साधना में रुचि बढ़ती जा रही थी। वर्ष 1993 की बात है सेवा से एक महीने की छुट्टी पर मैं सीधे माउंट आबू गया। वहां अन्य भाईयों ने मिलकर रात दो बजे से योग करने का संकल्प किया। पहले दिन 70 बीके कुमार थे। धीरे-धीरे कम होते गए। 17वें दिन रात दो बजे मैं और एक कुमार और योग करने पहुंचा। वहीं 18वें दिन रात दो बजे सिर्फ मैं पार्क में बैठे-बैठे योग कर रहा था। तभी अचानक मुझे स्पष्ट रूप में आत्म स्वरूप का साक्षात्कार हुआ। मैंने खुले नेत्रों से देखा कि मेरे शरीर से आत्मा निकल कर जा रही है। बीच में चमकता हुआ सितारा और आसपास सूक्ष्म शरीर का घेरा है। आत्मा ने ऊपर-ऊपर पूरे पांडव भवन परिसर घूमते हुए माउंट आबू का चक्कर लगाया। यह सब मेरी आंखों के सामने हुआ। सिर्फ प्रकाश ही प्रकाश दिख रहा था। सबसे बड़ी बात एक-एक चीज मुझे स्पष्ट दिख रही थी। मैं आसमान से सबकुछ साफ-साफ देख रहा था। उस दिन के आत्म स्वरूप के साक्षात्कार के बाद मुझे स्पष्ट हो गया कि ब्रह्माकुमारीज कोई साधारण विद्यालय नहीं है। इसमें ही जीवन बिताना है।

सेना में रहते 17 साल अपने हाथ से बनाकर भोजन किया

सेना में 17 साल की जॉब के दौरान मैंने अपने हाथ से बना शुद्ध सात्विक भोजन ही स्वीकार किया। जैसे ही राजयोग कोर्स में दीदी ने बताया कि प्याज-लहसुन का बना भोजन देवी-देवता स्वीकार नहीं करते हैं तो मैंने उस दिन से कभी यह सब नहीं खाया। 18 आरआर बटालियन में मैं तीन साल रहा। इस दौरान डेढ़ वर्ष कुपवाड़ा में तैनाती रही। वहां भीषण जानलेवा ठंड और माइनस डिग्री तापमान के बीच भी रोज नहाकर ही भोजन ग्रहण करता था। क्योंकि मैंने संकल्प लिया था कि बिना नहाए भोजन नहीं करुंगा। साथ ही तीन साल मैं सिर्फ चावल और दूध में रहा। क्योंकि जहां पोस्टिंग थी वहां भोजन बनाने का समय नहीं मिल पाता था। इस तरह सेना में होने के बाद भी अपनी भोजन की सात्विकता का पूरा ध्यान रखा। बचपन से ही मुझे ईमानदारी और कड़ी मेहनत का संस्कार था। इसलिए सेना में भी पूरी ईमानदारी से ड्यूटी की। इससे प्रभावित होकर मेरे मेजर ने कभी भी मुझे अलग से भोजन बनाने के लिए नहीं रोका। यहां तक कि श्रीनगर में 18 आरआर बटालियन के मेजर प्रभाकर साहब ने मेरी आस्था, समर्पण को देखकर बहुत मदद की। वह कहते थे जब तुम्हें लगे मेरे क्वार्टर में भोजन बना सकते हो। इस तरह पूरा जीवन पूरी नियम-मर्यादाओं के साथ जीया। सेना से सेवानिवृत्ति के बाद अब पूरा समय परमात्मा की सेवा में लगा दिया है। अमृतवेला 3 बजे से दिनचर्या शुरू हो जाती है। खुद को भाग्यशाली समझता हूं कि परमात्मा ने मुझे चुना। अपना बच्चा बनाया और यह महान ते महान दिव्य ज्ञान मुझे प्राप्त हुआ।

26 जनवरी को शादी थी मैं घर ही नहीं गया

ब्रह्माकुमार मेहर सिंह ने बताया कि वर्ष 1992 की बात है। मैं बटालियन से छुट्टी लेकर 16 जनवरी को माउंट आबू आ गया। पूरा निश्चय कर लिया था कि आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करुंगा और शादी नहीं करुंगा। लेकिन परिवार वाले शादी की बात पर अड़े थे। यहां तक कि उन्होंने रिश्ता भी तय कर दिया। 26 जनवरी को शादी भी तय हो गई। लेकिन मैं घर ही नहीं गया और आखिरकार लड़की वालों ने दूसरा लड़का देखकर उसकी शादी कर दी। इस घटना के बाद तीन साल तक घर नहीं गया, क्योंकि घर जाने पर शादी के लिए दबाव बनाते थे। पिताजी तीन साल बाद दीदी के पास आए और वादा किया कि इसकी शादी नहीं करुंगा, तब मैं घर गया।

विश्वास की शक्ति

जब नौ उग्रवादियों ने तान दी बंदूक, बाबा का साक्षात्कार हुआ तो पैरों में गिर पड़े

स्टोरी 10

शिव आमंत्रण, वरनाला (हरियाणा)।

बचपन से ही बहुत भक्ति करती थी। मेरा परिवार बहुत धार्मिक था और घर में संत-महात्मा बहुत आते थे। पढ़ाई पूरी होने के बाद मैं एक स्कूल में शिक्षिका के रूप में पढ़ाने लगी। वर्ष 1980 में वरनाला शहर में ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र खुला तो शिवरात्रि पर प्रभातफेरी निकाली गई। जब प्रभातफेरी हमारे घर के सामने से निकल रही थी उस समय एक गीत बज रहा था... जागे रे प्यारो, भगवान जगाने आया... यह गीत सुनकर मेरी आंखें खुल गईं। उनको देखते ही मैंने अपने मन में दृढ़ संकल्प कर लिया कि जीवन बनाना है तो ऐसा बनाना है।

वरनाल की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके पुष्प दीदी से उग्रवादियों ने मांगी दो लाख की फिरौती

यह कहना है वरनाल की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके पुष्प दीदी का। शिव आमंत्रण से विशेष चर्चा में उन्होंने बताया कि जब पहली बार सेवाकेंद्र गई तो वहां आदरणीया अचल दीदी मिलीं। जैसे ही मैं बाबा के रूम में गई तो आंखों से आंसू निकल आए। दीदी ने पूछा कि बच्ची आपका नाम क्या है तो मैंने कहा कि दीदी मेरा नाम वर्षा है। इस पर दीदी ने तुरंत मेरा नाम पुष्प रख दिया। फिर मैंने दूसरे दिन से ही राजयोग कोर्स शुरू कर दिया। दो माह ही हुए थे कि मैंने घर वालों से छुट्टी लेकर सेवाकेंद्र पर रहना शुरू कर दिया।

एक दिन शाम के समय सेवाकेंद्र पर सात सरदार लोग आए। दीदी ने कहा कि आप जाओगे सरदार लोगों को ईश्वरीय ज्ञान समझाने तो मैंने कहा कि जी दीदी मैं चली जाऊंगी। उन्हें मैंने समझाया तो सात दिन का राजयोग कोर्स भी कर लिया। लेकिन तब तक मुझे पता नहीं था कि वह उग्रवादी हैं। उस समय एक बुजुर्ग भाई रोज सेंटर आते थे तो एक दिन उन्होंने उन सातों लड़कों को देखा तो पूछा यह कब से आ रहे हैं। मैंने कहा कि यह तो बहुत दिन से कोर्स करने आ रहे हैं। तब जाकर उन्होंने बताया कि यह तो उग्रवादी हैं। अगले दिन जब वह आए तो मैंने पूछा कि आज आप लोग कहीं वारदात करके आए हैं तो उन्होंने कहा कि जी बहन जी, आज जब हम गए और जैसे ही गोली चलाई तो सामने आप दिखे। इस पर हम लोगों ने संकल्प किया है कि आज से यह रास्ता छोड़ देंगे।

...जब उग्रवादियों ने मांगी दो लाख की फिरौती

बीके पुष्प दीदी ने बताया कि एक बार सेंटर पर कोई एक लेटर डाल गया, जिसमें लिखा था कि आप फलाने जगह दो लाख रुपये लेकर पहुंच जाएं। आपको अकेले आना है। किसी को साथ में नहीं लाना है। यदि आप आज नहीं आए तो आज रात में आपके आश्रम में आग लगा देंगे। इस पर हम बहनों ने आपस में चर्चा की और सलाह की कि क्या करना चाहिए। बड़ी दीदी ने पूछा कि आप जाओगे तो मैंने मना कर दिया। कुछ देर बाद मैं बाबा के कमरे में गई तो ऐसा लगा कि बाबा कह रहे हों कि बच्ची तुम जाओ, चिंता मत करो मैं बैठा हूं। यह बात मैंने बड़ी दीदी को बताई तो उन्होंने कहा कि हम आपको ऐसे अकेले नहीं जाने देंगे। मैंने कहा कि बाबा ने इशारा दे दिया है मैं जाऊंगी, कुछ नहीं होगा। मैं जिद पर अड़ गई और प्रसाद लेकर साइकिल से निकल पड़ी। जिस जगह पर उन्होंने बुलाया था वह सेंटर से तीन-चार किमी दूर सुनसान जगह थी। वहां सिर्फ एक महात्मा की कुटिया थी। वहां जाकर मैं एक घंटा बैठी रही। जब वहां से उठकर आने लगी तो तीन मोटर साइकिल पर तीन-तीन सरदार आए और उन नौ लोगों ने मुझे एक घेरे में ले लिया। उन्होंने पूछा कि आप कहां जा रहे हो। मैंने तुरंत बाबा का आह्वान किया और बाबा के शब्द याद आए कि बच्ची! हर एक को आत्मा रुप में देखो। उन्होंने पूछा कि दो लाख रुपए लेकर आई हो तो मैंने कहा कि हमारे पास रुपए है ही नहीं तो आपको कहां से दें। वह बोले कि आपने जो बिल्डिंग बनाई है वह कहां से बनाई है। मैंने कहा कि वह तो हमारे भाई-बहनों के सहयोग से बनी है।

इस पर उग्रवादी बोले कि आप सीधे खड़े हो जाओ और सभी नौ लोगों ने मुझ पर बंदूक तान दी। मैं बिना डरे बाबा की याद में शांत खड़ी रही। वह गोली चलाने ही वाले थे कि उन्हें मेरी जगह ब्रह्मा बाबा दिखाई दिए। इस पर उन्होंने मुझसे पूछा कि आपके साथ ये बुजुर्ग कौन हैं। इस पर दूसरे ने कहा कि तुम दूर हो जाओ मैं गोली चलाता हूं। लेकिन कई प्रयास के बाद भी उससे गोली नहीं चली। इस पर सभी आपस में बात करने लगे कि इसके पास जरुर कोई दैवी शक्ति है। फिर सभी नौ उग्रवादी मेरे पैरों में गिर पड़े और माफी मांगने लगे। उन्होंने कहा कि आज से आप हमारी बहन हो। आपको कभी भी किसी भी चीज की जरुरत पड़े तो हमें बताना। फिर मैंने सभी को प्रसाद दिया। फिर से भी मेरे पांव में पड़े और बाद में सेवाकेंद्र आते और ज्ञान सुनते रहे।

डर के आगे जीत है

बाबा का कमाल... मेडिटेशन से एक दिन में ठीक हो गई एलर्जी

स्टोरी 11

शिव आमंत्रण, बैंगलुरु (कर्नाटक)।

बैंगलुरु की डॉ. प्रीति झा का राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास से बदला जीवन

मन में ईश्वर को पाने की प्रबल इच्छा, आस्था और विश्वास हो तो आपकी मनोकामना एक दिन जरूर पूरी होती है। बैंगलुरु निवासी 47 वर्षीय डॉ. प्रीति झा सत्य और परमात्मा की खोज में कितने संत-महात्माओं के पास गईं। टीवी चैनलों पर कई संतों को सुना लेकिन मन में जो प्रश्न थे उनका समाधान नहीं मिल सका। जीवन से जुड़े अनेक प्रश्न उनके मन में उमड़ रहे थे, लेकिन समाधान दूर-दूर तक नजर नहीं आ रहा था। ब्रह्माकुमारीज़ से ज्ञान लेने के बाद उन्हें सारे प्रश्नों का समाधान मिला गया । उन्हीं के शब्दों में जानते हैं जीवन का अनुभव....

18 मार्च 2005 में डिलीवरी के तुरंत बाद स्पाइनल में सीवियर प्रॉब्लम शुरू हो गया। पूरे शरीर की हड्डियों में सहनशक्ति से ज्यादा दर्द रहने लगा। मुंबई के ब्रिज कैंडी सहित सैकड़ों डॉक्टर्स का इलाज लिया, परंतु हड्डियों में दर्द का कारण और निवारण नहीं मिला। स्पाइनल के लिए डॉक्टर ने कहा सर्जरी काफी क्रिटिकल है, इसलिए विल पावर से ही आपको पूरी जिंदगी चलानी होगी। शरीर जैसे जिंदा लाश महसूस होने लगा था। मैं दर्द में तड़पती थी। जब पांचवी क्लास में थी तब से ही दुर्गा मां की भक्ति करती थी। अपने प्रश्न के उत्तर को जानने के लिए (मेरे साथ ऐसा क्यों?) न जाने टीवी चैनल पर कितने संतों को सुना। एक दिन फेसबुक पर मैसेज पढ़ रही थी जोकि दीदी शिवानी जी द्वारा लिखा हुआ था। तुरंत विचार आया कि इनके पास मेरे प्रश्न का उत्तर जरूर मिलेगा। मैंने युगल (पति जोकि फार्मास्यूटिकल साइंटिस्ट हैं) से कहा इनसे मिलना है। युगल ने सुनते ही खोजना शुरू किया और ऑनलाइन राजयोग मेडिटेशन कोर्स के बारे में पता चला और मैंने कोर्स किया। कोर्स के लास्ट दिन मैंगलोर शहर में सेंटर का एड्रेस मिला। उस दिन मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था। मैं ब्रह्माकुमारीज़ नाम से बिल्कुल ही अंजान थी। मंगलौर सेंटर की इंचार्ज आदरणीय दीदी विश्वेश्वरी जी से पहली ही मुलाकात में मन खुशी से झूम उठा। फिर सेंटर पर कोर्स किया।

पांच दिन ही मुरली सुनने से मिले सारे प्रश्नों के जवाब

29 सितंबर 2017 को ऑफलाइन (सेंटर पर) मेरा राजयोग मेडिटेशन कोर्स पूरा हुआ और अगले दिन 30 सितंबर 2017 को मैं पहली बार सेंटर पर मुरली सुनने के लिए पहुंची। मैंने सोचा शायद कोई मुरली वादन होगा परंतु जैसे ही सेंटर पहुंची तो वहां दीदी जी क्लास में मुरली सुना रहीं थीं। मैं जाकर बैठ गई। उसके बाद पता ही नहीं चला कहां बैठी हूं। एकदम लाल प्रकाश शरीर के भान से परे। पहले ही दिन मेरा अलौकिक जन्म हो गया और परमपिता शिव बाबा से मिलन हो गया। मात्र पांच दिन मुरली सुनने से ही सारे प्रश्नों के जवाब मिल गए।

... और दोबारा बैंगलुरु शिफ्ट हो गए

2015 में हम लोग मैंगलोर से बैंगलुरु अपने ऑन फ्लैट में शिफ्ट हो चुके थे। लेकिन एलर्जी ने इतना परेशान किया कि मरने जैसी हालत हो गई और श्वांस आने में निरंतर परेशानी होने लगी। डॉक्टर ने कहा जहां से आए हैं तुरंत वापस चले जाइए वरना यह एलर्जी अस्थमा में बदल जाएगी। इस पर फिर से मैंगलोर में शिफ्ट किया। एक दिन मेडिटेशन में बाबा ने टचिंग दी और दोबारा बैंगलुरु जाने के लिए कहा। जिसे सुनकर सभी आश्चर्यचकित हो गए और कहा दोबारा से वहां जाना सबसे गलत फैसला होगा। लेकिन युगल और बेटी मान गए और 6 जुलाई 2021 को बैंगलुरु में शिफ्ट हो गए। घर से पैदल सिर्फ 7 से 8 मिनट की दूरी पर ही रिट्रीट सेंटर है। बैंगलुरु के बन्नेरगट्टा गोट्टिगैरी रिट्रीट सेंटर (योग भवन) निदेशिका आदरणीय बीके दीदी सुजाता जी की नि:स्वार्थ पालना और प्यार से निरंतर अध्यात्म पथ पर बढ़ती गई।

मेडिटेशन से एक दिन में ठीक हो गई एलर्जी

8 अगस्त को एलर्जी ने ऐसा जोर पकड़ा कि हालत खराब होने लगी। तभी युगल और बेटी ने कहा कि अब बैंगलुरु में नहीं रहना है। 9 अगस्त को अमृतबेले हालात खराब हो रही थी। परंतु मन में दृढ़ विश्वास था कि बाबा आपने भेजा है तो हार हो नहीं सकती है। मैंने बाबा को पत्र लिखा और मेडिटेशन के लिए बैठ गई। जब मेडिटेशन के लिए बैठी थी तो बुरी तरह से एलर्जी से पीड़ित थी। लेकिन जब एक घंटा 40 मिनट के पावरफुल मेडिटेशन के बाद उठी तो एलर्जी पूरी तरह से समाप्त हो चुकी थी। मेरे मीठे प्यारे शिव बाबा ने एलर्जी की भयंकर बीमारी से मुझे मुक्त कर दिया।

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

मेडिटेशन का जादू, 15 साल पुराना माइग्रेन हुआ ठीक

स्टोरी 12

शिव आमंत्रण, सोल्हापुर (महाराष्ट्र)

महाराष्ट्र, औरंगाबाद की प्रेमा काकानी बोलीं- राजयोग से सिरदर्द भी नहीं हुआ कभी

मुझे 15 साल माइग्रेन की समस्या रही। कभी-कभी दर्द इतना होता था कि दो-दो दिन तक सोती रहती थी। भोजन भी नहीं करती थी। कई वैद्य और डॉक्टर्स को दिखाया लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। माइग्रेन का जब तेज दर्द होता तो बेहाल हो जाती थी। कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या करुं। फिर एक दिन ब्रह्माकुमारीज़ के बारे में पता चला। मैंने ब्रह्माकुमारी दीदी के कहने पर सात दिन का राजयोग मेडिटेशन कोर्स किया तो पहले ही दिन आराम हो गया। सात दिन में तो दर्द ऐसे गायब हो गया जैसे पहले कभी हुआ भी नहीं था। पिछले सात साल से माइग्रेन तो दूर सिरदर्द भी नहीं हुआ है। यह सब राजयोग और शिव बाबा का कमाल है।

यह कहना है महाराष्ट्र, औरंगाबाद निवासी प्रेमा काकानी का। शिव आमंत्रण से विशेष बातचीत में उन्होंने बताया कि राजयोग कोर्स के बाद मैंने पहले ही दिन से मेडिटेशन करना शुरू किया। इतना फायदा हुआ कि मैं देखकर अंचभित रह गई। कोर्स पूरा होते-होते सात दिन के अंदर तो पूरा दर्द गायब हो गया। वर्षों बाद में चैन की नींद सोई। परमात्मा का कमाल है कि इन सात वर्षों में सिरदर्द तक नहीं हुआ। अब तो सदा खुश रहती हूं। रोज अमृतवेला 3.30 से 4 बजे के बीच उठकर मेडिटेशन करती हूं। रोज मुरली सुनती हूं, बाबा का रोज मार्गदर्शन और गाइनलाइन मिलती है।

बाबा को गुस्सा दे दिया दान में

काकानी ने बताया कि ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ने के पहले मुझे बहुत गुस्सा आता था। बच्चों पर और पति पर गुस्सा करती थी। इससे घर में माहौल अशांत रहता था। लेकिन बाबा का ज्ञान मिलने के बाद तो घर का माहौल सुख-शांतिमय हो गया है। सब आपस में मिलजुलकर प्रेम से रहते हैं। योग के दौरान मैंने बाबा को गुस्सा दान में दे दिया। अब तो सदा खुश रहती हूं।

राजयोग से हर बीमारी हो जाएगी दूर

मेरा आप सभी से यही आह्वान है कि राजयोग में वह शक्ति है जो असंभव को संभव कर सकती है। जरूरत है तो राजयोग सीखकर सच्चे मन से परमात्मा को याद करने की। आज ब्रह्माकुमारीज़ में एक नहीं लाखों परिवार हैं जिनका जीवन यह ज्ञान लेने के बाद आनंदमय बन गया है। आप सभी भी राजयोग सीखें। मैं अपने अनुभव से कह सकती हूं कि आपके जीवन में कोई भी समस्या हो, बीमारी हो सब दूर हो जाएगा।

निश्चय में ही विजय है

जब बाबा बोले- बच्चे! तुम चिंता मत करो, मैं बैठा हूं...

स्टोरी 13

शिव आमंत्रण, अहमदाबाद (गुजरात)

अहमदाबाद के बीके मंगल भाई को राजयोग से जीवन में मिली नई दिशा

वर्ष 1980 की बात है। मैं सरकारी हॉस्पिटल में एकाउंटेंट था। उस समय पेमेंट चेक की जगह कैश में ही किया जाता था तो बैंक से 25 लाख रुपये निकालकर कर्मचारियों का पेमेंट करने के लिए ले आया। शनिवार का दिन होने से सभी कर्मचारी पेमेंट लेने नहीं आए और 80 फीसदी कर्मचारियों की पेमेंट बाकी रह गई। जिस लॉकर में रुपए रखे थे जल्दबाजी में उसे लॉक करना भूल गया और चॉबी उसी में लगी छोड़ आया। घर आकर जब धर्मपत्नी ने पूछा कि तिजोरी की चॉबी कहां है तो मुझे याद आया कि वह तो उसी में लगी भूल आया हूं। बड़े अधिकारी को फोन कर घटना बताई लेकिन उन्होंने कहा कि अब ऑफिस खुलना मुश्किल है। इस पर तुरंत शिब बाबा की याद में बैठ गया और कहा कि बाबा अब आप ही संभालो। बाबा ने योग में अनुभूति कराई कि बच्चे! तुम चिंता मत करो, मैं बैठा हूं। जब सोमवार को ऑफिस जाकर देखा तो ज्यों का त्यों पूरा कैश तिजोरी में पड़ा था। चॉबी उसी में लगी हुई थी। यह देखकर दिल ही दिल बाबा का धन्यवाद दिया।

शिव आमंत्रण से बातचीत में अपने जीवन का यह विशेष अनुभव गुजरात, अहमदाबाद निवासी 73 वर्षीय बीके मंगल भाई ने बताया। अमृतवेला रोज सुबह 3.30 बजे से दिनचर्या शुरू हो जाती है। राजयोग ध्यान आज जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गया है। पूरा समय ईश्वरीय सेवा में सफल करता हूं।

26 साल की उम्र में 1976 में मिला ज्ञान

26 साल की उम्र में वर्ष 1976 में मैं ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आया। खुद को भाग्यशाली समझता हूं कि पूर्व मुख्य प्रशासिका आदरणीय राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि ने खुद मेरे मेहसाणा जिले के गांव में गीतापाठशाला का शुभारंभ किया। वरदानीमूर्त दादी ने मेरे माता-पिता और दादा-दादी को आशीर्वाद दिया। बाबा का कमाल है कि सभी ने चलते-फिरते शरीर छोड़ा। किसी को भी कोई बीमारी या दिक्कत नहीं हुई। गांव-गांव में हजारों लोगों को ईश्वरीय संदेश देने, उनका जीवन बदलने और भटके हुए लोगों को राह दिखाने का मुझे परम सौभाग्य मिला। पहले मैं साइकिल से ही दूर-दूर तक गांवों में लोगों को परमात्म संदेश देने के लिए जाता था। संस्थान से जुड़ने के बाद पूरा जीवन संयम के मार्ग पर चलते हुए पवित्रता के साथ रहा। घर में बेटे की बढ़िया जॉब है और अच्छा कमा रहा है। बेटी की शादी हो गई है वह भी सुखी है। अब जीवन का ज्यादा से ज्यादा समय शिव बाबा की याद और सेवा में ही व्यतीत करता हूं। लोटस हाऊस की प्रभारी आदरणीया बीके शारदा दीदी के निर्देशन में सेवाएं दे रहा हूं।

RNI:RAJHIN/2013/53539

शिव आमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

वर्ष 11, हिन्दी (मासिक), पृष्ठ 4

महा शिवरात्रि विशेष 2024

विश्व में तेजी से बदल रही परिस्थितियां दे रहीं बदलाव का इशारा

दुनिया की सबसे महान घटना गुप्त रूप में हो रही घटित

वर्तमान में देश-दुनिया में तेजी से बदल रहे घटनाक्रम, मानवीय प्रवृत्तियां, भौगोलिक वातावरण सब बदलाव की ओर इशारा कर रही हैं। हर चीज इतनी अति में जा रही है जिनका वर्णन शास्त्रों तक में नहीं है। यह सब परिस्थितियां इशारा कर रहीं हैं कि परमात्मा के अवतरण का यही उचित समय है। सबसे महत्वपूर्ण बात दुनिया की यह सबसे बड़ी और महान घटना बहुत ही गुप्त रूप में घटित हो रही है। वक्त की नजाकत को देखते हुए जिन्होंने इस महापरिवर्तन को भाप लिया है वह निराकार परमात्मा की भुजा बनकर संयम के पथ पर बढ़ते जा रहे हैं। इन्होंने न केवल परमात्मा की सूक्ष्म उपस्थिति को महसूस किया है वरन इस महान कार्य के साक्षी भी हैं। महापरिवर्तन और कल्प की पुनरावृत्ति के संधिकाल को स्पष्ट करती **शिव आमंत्रण की विशेष रिपोर्ट....**

परमात्म अवतरण का समय है...क्यों ? कैसे

राजयोग की शिक्षा देकर परमात्मा रच रहे हैं नया संसार

परमात्मा का अवतरण क्यों जरूरी है... ?

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥4-7॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥4-8॥

इस श्लोक का अर्थ मैं अवतार लेता हूं। मैं प्रकट होता हूं। जब-जब धर्म की हानि होती है, तब तब मैं आता हूं। जब-जब अधर्म बढ़ता है, तब-तब मैं साकार रुप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूं। मैं सज्जन लोगों की रक्षा, दुष्टों के विनाश, धर्म की स्थापना के लिए युग-युग में प्रकट होता हूं। श्रीमदभगवत गीता के चौथे अध्याय के ये सातवां और आठवां श्लोक परमात्मा के अवतरण का सूचक है। वर्तमान समय में धर्मग्लानि के सभी चिंह्न दिख रहे हैं। मनुष्य और मनुष्यता इतने निम्म स्तर पर पहुंच चुकी है जिसका जिक्र शास्त्रों में भी नहीं किया गया है। सतयुग, त्रेतायुग में धर्म अपनी श्रेष्ठ स्थिति में होता है। द्वापरयुग से धर्मग्लानि प्रारंभ होती है परंतु वह परमात्मा के अवतरण का समय नहीं होता है। कलियुग में धर्म की अतिग्लानि होती है और मानवता का पतन हो जाता है। जिसके उत्थान का कार्य परमात्मा के सिवाए और कोई नहीं कर सकता। परमात्मा का अवतरण धर्म स्थापना के लिए होता है न कि धर्मग्लानि के लिए। इसलिए कलियुग के अंत में जब अधर्म बढ़ जाता है, तभी परमात्मा का दिव्य अवतरण होता है और पुन: सतयुग की स्थापना होती है।

परमात्मा कैसे अवतरित होते हैं...?

शिवपुराण के कोटि रुद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है- मैं ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट होऊंगा। महाभारत में भी लिखा है कि जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई और वह ज्योतिर्लिंग ही नए युग की स्थापना के निमित्त बना। इसका यही भाव है कि परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के ललाट में अवतरित हुए और उनके मुख द्वारा ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देकर इस दु:ख से भरे एवं तमोगुणी हो चुके संसार का कल्याण किया। यदि शिवरात्रि में छिपे आध्यात्मिक रहस्यों को पूर्ण रुप से समझा जाए तो विश्व परिवर्तन सहज ही हो सकता है।

शिव बाबा की दिव्य अनुभूति की है

परमपिता शिव परमात्मा की दिव्य अनुभूति मैंने अपने जीवन में खुद महसूस की है। मुझे उनका हर पल साथ महसूस होता है। मैं आज भी अलसुबह ब्रह्ममुहूर्त में 3.30 बजे से एक घंटा परमात्मा शिव बाबा का ध्यान लगाती हूं। परमात्मा के ध्यान से ही आत्मा में दिव्य गुण और शक्तियां आती हैं। हमारा आत्मबल बढ़ता है। क्योंकि परमात्मा ही सभी मनुष्यात्माओं के परमपिता हैं। सत् चित आनंद स्वरुप हैं। लेकिन आज हम अपने स्वरुप को भूल गए हैं। ब्रह्माकुमारी बहनें सिखाती हैं कि कैसे हम शांति, सुख और आनंद से रहें।

- द्रौपदी मुर्मु, राष्ट्रपति, भारत

ज्ञान-योग, इनोवेशन का समय है

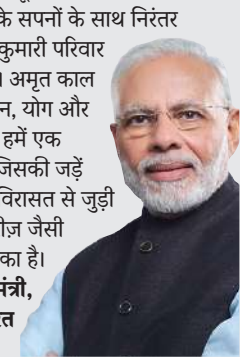

ब्रह्माकुमारीज़ का प्रभाव पूरे विश्व में है। मैं देश के संकल्पों के साथ, देश के सपनों के साथ निरंतर जुड़े रहने के लिए ब्रह्माकुमारी परिवार का अभिनंदन करता हूं। अमृत काल का यह समय हमारे ज्ञान, योग और इनोवेशन का समय है। हमें एक ऐसा भारत बनाना है, जिसकी जड़ें प्राचीन परंपराओं और विरासत से जुड़ी होंगी। इसमें ब्रह्माकुमारीज़ जैसी संस्थाओं की बड़ी भूमिका है।

- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत

मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है...

यदि भक्ति से भगवान मिलते तो फिर परमात्मा को यह बात क्यों कहनी पड़ती कि वत्स! तू मन को मुझमें लगा

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

गीता में भगवान के महावाक्य हैं 'मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है। मैं सूर्य, चांद और तारागण के भी पार परमधाम का वासी हूं। परमात्मा कहते हैं कि मैं प्रकृति को वश करके इस लोक में सतधर्म की स्थापना करने और प्रायः लुप्त हुआ ज्ञान सुनाने आता हूं। वत्स तू मन को मुझ में लगा। मैं तुझे सब पापों से मुक्त करुंगा, मैं तुम्हें परमधाम ले चलूंगा। अब सवाल उठता है कि वह लुप्त हुआ ज्ञान क्या है? यदि वर्तमान में दिया जा रहा ज्ञान सही है तो फिर परमात्मा को इस धरा पर क्यों आना पड़ता है? आखिर इस सृष्टि में सत्य ज्ञान क्यों और कैसे लुप्त हो जाता है? सत्य ज्ञान से मनुष्य दूर क्यों हो जाते हैं? इन सवालों के जवाब स्वयं परमात्मा राजयोग की शिक्षा के आधार पर देते हैं।

परमात्मा कहते हैं- वत्स! तू मन को मुझ में लगा। यदि भक्ति से भगवान मिलते तो फिर परमात्मा को यह बात क्यों कहनी पड़ती कि वत्स! तू मन को मुझमें लगा। जैसे एक दिन में कोई विशाल पेड़ तैयार नहीं हो जाता है, उसी तरह आत्मा पर कई जन्मों पर चढ़ी विकारों, पापों की परत एक दिन में दूर नहीं होती है। इसके लिए हमें नियमित, सतत् परमात्मा का ध्यान करना पड़ता है। कर्म में ही योग को शामिल कर कर्मयोगी, राजयोगी जीवनशैली को अपनाना होता है।

जब हम मन को एकाग्र कर खुद को आत्मा समझकर निरंतर परमात्मा को याद करते हैं तो उनकी शक्तियों से आत्मा पर लगी विकारों, पापकर्म की मौल धुलती जाती है। धीरे-धीरे एक समय बाद आत्मा, परमात्मा की शक्ति से संपूर्ण पावन, पवित्र और सतोप्रधान अवस्था को प्राप्त कर लेती है।

मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते...

- परमात्मा ने श्रीमद्भगवद गीता के नौवें अध्याय के 11वें श्लोक में कहा है कि अवजानन्ति माँ मूढ़ा मानुषी तनुमाश्रितम्, परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्। अर्थात् मनुष्य तन का आश्रय लेने वाले मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते हैं। यद्यपि मैं महेश्वर (परमात्मा) हूं तो भी व्यक्त भाव वाले मुझे नहीं पहचान सकते हैं। मूढ़मति से तात्पर्य है कि जो परमात्मा के बताए सत्य ज्ञान को स्वीकार नहीं करते हैं।
- रामायण में लिखा है कि- बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना। कर बिनु करम करइ विधि नाना। आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बकता बड़ जोगी (शिव के लिए)।। वह निराकार परमात्मा (ब्रह्मलोक निवासी) बिना पैर के चलता है, बिना कान के सुनता है, बिना हाथ के नाना प्रकार के काम करता है। फिर भी हजारों भुजा वाला है। बिना मुंह के सारे (छहों) रसों का आनंद लेता है और बिना वाणी के बहुत योग्य वक्ता है। वही हमारा परमात्मा राम है।
- मनुस्मृति में भी यही लिखा है कि सृष्टि के आरंभ में एक अंड प्रकट हुआ, जो हजारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था।
- महाभारत में लिखा है कि सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई और वह ज्योतिर्लिंग ही नए युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया। सभी वेद और शास्त्रों में कहीं न कहीं परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है।

श्रीमद्भ भगवत गीता से लेकर महाभारत, शिवपुराण,रामायण, यजुर्वेद, मनुस्मृति सभी में कहीं न कहीं परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है। किसी भी धर्म ग्रंथ में परमात्मा के जन्म लेने की बात नहीं है। हर जगह प्रकट होने, अवतरण पर परकाया प्रवेश की बात को ही इंगित किया गया है। क्योंकि परमात्मा का अपना कोई शरीर नहीं होता है। वह परकाया प्रवेश कर नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना का दिव्य कार्य कराते हैं। यहां तक कि शिवपुराण में स्पष्ट लिखा है कि मैं ब्रह्मा के ललाट से प्रकट होऊंगा।

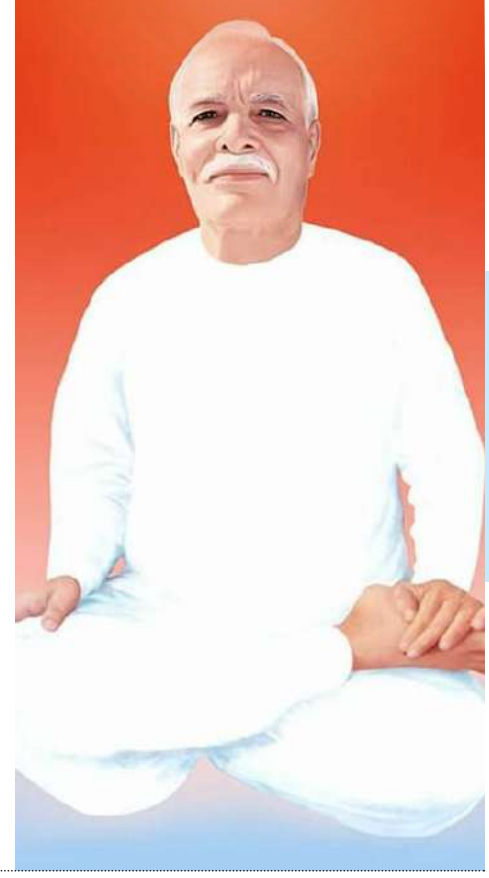

ब्रह्मा मुख से देते हैं दिव्य ज्ञान

शिवपुराण में कोटि रुद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है कि 'मैं ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट होऊंगा। समस्त संसार को दुःखों से मुक्त करने और नवयुग की आधारशिला रखने के लिए परमात्मा शिव ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट हुए और उनका नाम रुद्र हुआ। यहां ललाट से तात्पर्य ज्ञान से है। परमपिता शिव परमात्मा को ज्ञान का सागर कहा जाता है। परमात्मा ज्ञान सागर हैं तो हम आत्माएं उनकी संतान ज्ञान स्वरुप हैं। ज्ञान को शक्ति भी कहा जाता है। इसलिए दुनिया में ज्ञानी महापुरुषों की महिमा और गायन है। जब परमात्मा ब्रह्माजी के तन का आधार लेकर सच्चा गीता ज्ञान देते हैं।

कहां है परमपिता परमात्मा शिव का निवास स्थान?

आज लोगों ने अज्ञानता के कारण मनुष्यों, देवताओं और परमात्मा के निवास स्थान को एक मान लिया है जो मनुष्य की सबसे बड़ी भूल है। परमात्मा के बारे में जानने के बाद यह स्पष्ट रुप से हमें जानने की आवश्यकता है कि परमात्मा और हम सभी मनुष्यात्माएं कहां से इस सृष्टि पर आती हैं। इस सृष्टि चक्र में तीन लोक होते हैं- स्थूल वतन, सूक्ष्म वतन और मूल वतन अर्थात परमधाम।

स्थूल लोक... : मनुष्य सृष्टि अथवा स्थूल लोक जिसमें हम निवास करते हैं। यह आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इन पांचों तत्वों से बनी है। इसे कर्म क्षेत्र भी कहते हैं। क्योंकि मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल भोगता है। इसी लोक में ही जन्म-मरण है। अत: इस सृष्टि को विराट नाटकशाला, लीलाधाम भी कहा जाता है। इस सृष्टि में संकल्प, वचन और कर्म तीनों हैं। यह सृष्टि आकाश तत्व में अंशमात्र में है। स्थापना, विनाश और पालना- परम आत्मा के दिव्य कर्त्तव्य भी इसी लोक से संबंधित हैं। सृष्टि की हर 5000 वर्ष बाद हूबहू पुनरावृत्ति होती है और आत्माएं नियत समय पर अपना-अपना पार्ट बजाने इस सृष्टि रंगमंच पर आती हैं।

सूक्ष्मलोक... : सूर्य-चांद से भी पार एक अति सूक्ष्म (अव्यक्त) लोक है। उस लोक में पहले सफेद रंग के प्रकाश तत्व में ब्रह्मापुरी, उसके ऊपर सुनहरे लाल प्रकाश में विष्णु पुरी और उसके भी पार महादेव शंकर पुरी है। इन तीनों देवताओं की पुरियों को संयुक्त रुप से सूक्ष्म लोक कहते हैं। क्योंकि इन देवताओं के शरीर, वस्त्र और आभूषण आदि मनुष्यों के स्थूल शरीर और वस्त्र आदि की तरह नहीं हैं। दिव्य चक्षु द्वारा ही इनका साक्षात्कार हो सकता है। इन पुरियों में संकल्प और गति तो है, लेकिन वाणी अथवा ध्वनि नहीं है। इसमें मृत्यु, दुःख या विकारों का नाम निशान नहीं होता। इन तीनों देवताओं द्वारा ही परमात्मा सृष्टि की स्थापना, विनाश और पालना कराते हैं।

परमधाम... : सूक्ष्म लोक से भी ऊपर एक असीमित रुप से फैला हुआ तेज सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है। इसे अखंड ज्योति ब्रह्मतत्व कहते हैं। यह तत्व पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से भी अति सूक्ष्म है। इसका साक्षात्कार दिव्य चक्षु द्वारा ही हो सकता है। ज्योतिर्बिन्दु त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव और सभी धर्मों की आत्माएं अव्यक्त वंशावली में इसी लोक में निवास करती हैं। इसे ब्रह्मलोक, परमधाम, शांतिधाम, निर्वाणधाम, मोक्षधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। इस लोक में न संकल्प है, न कर्म हैं। अत: वहां न सुख है, न दुःख है बल्कि एक न्यारी अवस्था है।

सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में ज्योति, लाइट, प्रकाश, नूर, ओंकार कहकर परमसत्ता निराकार परमात्मा की सत्ता स्वीकारी

ज्योतिर्बिंदु स्वरूप हैं परमपिता परमात्मा

विश्व के सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में सर्वशक्तिमान परमात्मा शिव की महिमा गाई है। जहां श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध के पहले ज्ञानेश्वर के रूप में तो श्रीराम ने भी रावण से युद्ध के पहले रामेश्वरम् में शिवलिंग की पूजा की। गुरुवाणी में कहा है- एक ओंकार निराकार तो मुस्लिम धर्म में अल्लाह को नूर कहा। जीजस ने कहा गॉड इज लाइट। इस तरह निराकार ज्योतिर्लिंग परमात्मा का यादगार और स्मरण सभी धर्मों में किया गया है। क्योंकि सारी सृष्टि के रचनाकार, सृजनहार, पालनहार वही परमसत्ता परमात्मा ही हैं।

शिव आमंत्रण, आबू रोड

विश्व के प्रायः सभी धर्मों के लोग परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास करते हैं। सभी मानते हैं परमात्मा एक है। सर्वशक्तिमान परमात्मा के बारे में एक बात सर्वमान्य है कि परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हैं। इस संबंध में केवल भाषा के स्तर पर ही मतभेद हैं, स्वरूप के संबंध में नहीं। शिवलिंग का कोई शारीरिक रूप नहीं है क्योंकि यह परमात्मा का ही स्मरण चिह्न है। शिव का शाब्दिक अर्थ है 'कल्याणकारी और लिंग का अर्थ है प्रतिमा अथवा चिह्न। अतः शिवलिंग का अर्थ हुआ कल्याणकारी परपपिता परमात्मा की प्रतिमा। प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों (जो कि प्राकृतिक रूप से ही प्रकाशवान् होते हैं) के बनाए जाते थे, क्योंकि परमात्मा का रूप ज्योतिर्बिन्दु है। सोमनाथ के मंदिर में सर्वप्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे कोहिनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी आकार में मान्यता दी गई है।

रावण को हराने श्रीराम ने की पूजा

परमात्मा शिव की पूजा स्वयं श्रीराम ने भी की है, जो वर्तमान समय में रामेश्वरम के रूप में पूजा जाता है। परमात्मा शिव, श्रीराम के भी आराध्य हैं। यदि श्रीराम भगवान होते तो उन्हें ज्योतिर्लिंगम की पूजा करने की क्या आवश्यकता हुई? वह जानते थे रावण को अपनी जिस शक्ति का अभिमान है वह उसने परमात्मा शिव की तपस्या करके ही प्राप्त की थी।

शंकरजी भी लगाते हैं ध्यान

हम शंकरजी को हमेशा ध्यान की मुद्रा में देखते हैं। इससे स्पष्ट है उनके भी कोई आराध्य या देव हैं, जिनका वह स्मरण करते रहते हैं। परमात्मा शिव, शंकर के भी रचयिता हैं। वह शंकर द्वारा इस आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं। शंकर जी की ध्यान मुद्रा में योग की वह अवस्था बताई है। अर्धनेत्र खुले और अर्ध पद्मासन या सुखासन का आसन, जिसमें वह निराकार परमात्मा का ध्यान लगाते हैं।

श्रीकृष्ण ने पांडवों से करवाई पूजा

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में श्रीकृष्ण ने भी ज्ञानेश्वर, सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता, सर्वशक्तिवान, निराकार शिव की पूजा-अर्चना की और उस शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पांडवों से भी शिव की पूजा करवाई। इसके बाद युद्ध के मैदान में उतरे और कौरवों पर विजय प्राप्त की। शिव को भोलेनाथ भी कहा गया है, क्योंकि वह सहज ही प्रसन्न होने वाले हैं।

निराकार, निर्वैर, सतनाम्

सिख धर्म में गुरुनानक देवजी ने कहा है एक ओंकार निराकार। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। 'वो निराकार है, निर्वैर है, सतनाम् है जिसको काल कभी नहीं खा सकता। यह सब महिमा गुरुवाणी में लिखी हुई है। हमने ज्योतिर्लिंगम कहा उन्होंने निराकार, निर्वैर, सत्यनाम कहा। गुरुनानक देव जी को हमेशा ऊपर की तरफ अंगुली करते दिखाया गया है।

नूर-ए-इलाही

मुस्लिम धर्म में मान्यता है कि जीवन में एक बार मक्का मदीना की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। इस पवित्र पत्थर का दर्शन मुसलमानों के लिए आवश्यक माना गया है। वो भी निराकार है, जिसकी कोई साकार आकृति नहीं है। उसको ही संग-ए-असवद और अल्लाह कहा। उसे वह लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं। नूर-ए-इलाही अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम वा ज्योतिस्वरूप कहा है। ज्योति माना ही तेज। अतः सभी धर्मों ने किसी न किसी रूप मे उस परमसत्ता की शक्ति को स्वीकारा है। इसके अलावा विश्वभर के सभी वेद-शास्त्रों, उपनिषद, ग्रंथ आदि सभी में कहीं न कहीं परमात्मा के ज्योति स्वरूप की व्याख्या की है। वही त्रिलोकीनाथ, तीनों लोकों के ज्ञाता परमपिता परमेश्वर परमात्मा शिव हैं।

शिव के साथ क्या है रात्रि का संबंध...?

विश्व की सभी महान विभूतियों के जन्मोत्सव मनाए जाते हैं, लेकिन परमात्मा शिव की जयंती को जन्मदिन न कहकर शिवरात्रि कहा जाता है, आखिर क्यों? इसका अर्थ है परमात्मा जन्ममरण से न्यारे हैं। उनका किसी महापुरुष या देवता की तरह शारीरिक जन्म नहीं होता है। वह अलौकिक जन्म लेकर अवतरित होते हैं। उनकी जयंती कर्त्तव्य वाचक रूप से मनाई जाती है। जब- जब इस सृष्टि पर पाप की अति, धर्म की ग्लानि होती है और पूरी दुनिया दुःखों से घिर जाती है तो गीता में किए अपने वायदे अनुसार परमात्मा इस धरा पर अवतरित होते हैं।

21 जन्मों का क्या है राज...?

परमात्मा इस धरा पर आकर ज्ञान देते हैं और मनुष्य आत्माओं का आह्वान करते हैं कि मेरे बच्चों मुझ से योग लगाओ तो मैं तुम्हें 21 जन्मों की बादशाही दूंगा। तुम्हें जन्मोंजन्म के लिए सर्व दुःखों से मुक्त कर स्वर्णिण दुनिया में ले चलूंगा। कलियुग के कलिकाल में जब मनुष्य आत्मा पापों के बोझ तले तबकर तमोप्रधान हो जाती है तो परमात्मा राजयोग की शिक्षा देकर सतोप्रधान बनने की राह दिखाते हैं। सतयुग में प्रत्येक आत्मा के 8 जन्म होते हैं, वहीं त्रेतायुग में 12 जन्म होते हैं। सतयुग और त्रेतायुग में सर्व आत्माएं सदा सुखी, आनंदमय रहतीं हैं। उस स्वर्णिम दुनिया में दूर-दूर तक दुख को नामोनिशान नहीं होता है। प्रकृति भी सुखदायी रहती है।

ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान से लाखों लोगों को मिला जीवन का लक्ष्य

स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के विचार से विश्वभर में आई क्रांति

श्वेतवस्त्रधारिणी, बालब्रह्मचारिणी, राजयोगिनी, तपस्विनी ब्रह्माकुमारियों ने यह साबित कर दिखाया है कि यदि नारी को मौका मिले तो वह पुरुषों से बेहतर कार्य कर सकती हैं। वह अदम्य साहस, शक्ति और सामथ्य से भरपूर है। ब्रह्माकुमारियों के त्याग और तपस्या का परिणाम है कि आज आध्यात्म की गूंज सारे विश्व में सुनाई दे रही है। हर कोई ध्यान की पद्धति सीखने, समझने और आत्मसात करने के लिए लालायित है। क्योंकि मानसिक व्याधियों के लिए राजयोग ध्यान के अलावा दूसरो कोई चारा नहीं है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का एक विचार आज क्रांति बनकर गूंज रहा है। आत्मा का परमात्मा महामिलन कराने में ब्रह्माकुमारियां शांतिदूत बनकर जन-जन को जगा रही हैं।

1937 में हुई ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना

1950 में माउंट से विश्व सेवाओं का शंघनाद

1970 में विदेशी सरजमीं पर शुरुआत

140 देशों में राजयोग का दिया जा रहा संदेश

46 हजार ब्रह्माकुमारी बहनें समर्पित

20 लाख लोग विद्यालय के विद्यार्थी

20 प्रभागों से समाज के सभी वर्गों की सेवा

07 पीस मैसेंजर अवार्ड यूएनओ से मिले

हीरो के जौहरी से विश्व शांति के मसीहा का सफर...

सन् 1937 की बात है। हीरे-जवाहरात के उस समय के प्रसिद्ध जौहरी दादा लेखराज की जिंदगी सुख-शांतिमय चल रही थी। लेकिन परमात्मा को पाने की दिल में इतनी प्रबल इच्छा शक्ति और उत्कंठा थी कि उन्होंने अपने जीवन में 12 गुरु बनाए थे। वह गुरु की आज्ञा को भगवान की आज्ञा मानते थे। दादा लेखराज एक दिन वाराणसी में अपने मित्र के यहां गए थे। उन्हें रात्रि में अचानक इस दुनिया के भयंकर महाविनाश का साक्षात्कार होने लगा। ऐसे विनाशक हथियारों का साक्षात्कार हुआ जो उस समय इसकी परिकल्पना तक नहीं की थी। फिर इसके बाद नई दुनिया की स्थापना के लिए आसमान से उतरते देवी-देवताओं का भी साक्षात्कार हुआ। दादा को यह बात समझ नहीं आई। जब वह घर पहुंचे और एक दिन कमरे में बैठे थे, तब उनके अंदर निराकार परमपिता परमात्मा ने प्रवेश कर साक्षात्कार कराया। साथ ही स्वयं परमात्मा ने अपना परिचय दिया कि- निजानन्द् स्वरुपं शिवोहम्, शिवोहम्। आनन्द स्वरुपम शिवोहम् शिवोहम्। प्रकाश स्वरुपम शिवोहम् शिवोहम्। इस परिचय के साथ परमपिता परमात्मा ने आदेश दिया कि अब तुम्हें एक नई दुनिया बनानी है। यही से शुरु हुआ परमात्मा के दुनिया बदलाव का गुप्त कार्य जो आज तक अनवरत चल रहा है।

नारी को ताज देकर शक्ति स्वरूपा बनाया...

दादा ने विश्व परिवर्तन के इस महान कार्य की जब नींव रखी तब नारी की समाज में दशा ठीक नहीं थी। चूंकि परमात्मा को भारत माता और वंदे मातरम् की गाथा को चरितार्थ भी करना था। नारी को शक्ति स्वरुपा के ताज से सुशोभित करने के लिए ओम मंडली नाम से संगठन बनाया। इसमें सारा दायित्व संचालन से लेकर ज्ञान अमृत देने की जिम्मेदारी नारी शक्ति को सौंपी। बाबा की विराट सोच ही थी कि नारी को विश्व शांति और युग परिवर्तन का कलश सौंपकर उनका हर पल मार्गदर्शन किया। परमात्मा ने दादा को दिव्य नाम प्रजापिता ब्रह्मा दिया, जिन्हें हम सभी प्यार से ब्रह्मा बाबा कहने लगे।

14 वर्ष ज्ञान-योग की भट्टी में तपाया...

परमात्मा तो जानी जाननहार है इसलिए उन्होंने भविष्य की स्थिति को शक्तिशाली और परमात्मा के अवतरण को पुख्ता करते हुए भाई-बहनों को 14 वर्ष तक घोर तपस्या कराई। ज्ञान और योग की भट्टी में तपाया। संस्था के प्रारंभ में जुड़ने वाली अधिकतर माताएं-बहनें और कुछ भाई 14 वर्ष तक घर से बाहर नहीं निकले और तपस्या करके स्वयं को इतना शक्तिशाली बना लिया कि आज उनके तप और त्याग की शक्ति दूसरों को भी आध्यात्म और परमात्म मिलन के पथ पर अग्रसर कर रही है। इसी तपस्या का परिणाम है कि पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी को मोस्ट स्टेबल माइंड ऑफ द वर्ल्ड के खिताब से नवाजा गया था। वह 60 वर्ष की उम्र में विदेश की सरजमीं पर पहुंचीं और अकेले 80 देशों में आध्यात्म का परचम फहराया।

कैसी होगी आने वाली स्वर्णिम दुनिया

आने वाली नई सतयुगी स्वर्णिम दुनिया धन-धान्य से भरपूर, हीरे-जवाहरात के महल होंगे। वहां 12 महीने मौसम सदाबहार रहता है। प्रकृति के पांचों तत्व संतुलित और सुखदायी होते हैं। हमारे संकल्पों के आधार पर प्रकृति चलती है। उस दुनिया में प्रत्येक देवी-देवता सदा सर्व गुणों, सर्व शक्तियों और सर्व कलाओं से भरपूर और संपन्न होते हैं। परम वैभव से संपन्न वह दुनिया इतनी सुंदर, सुखमय, आनंदमय होगी जिसकी मात्र कल्पना ही की जा सकती है। वहां संकल्प शक्ति के आधार पर दुनिया चलती है। जहां दूध-घी की नदियां बहती हैं, गाय और शेर एक घाट पानी पीते हैं।

वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव आज मूर्तरूप ले रहा है...

भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के बाद परमात्मा के निर्देशानुसार 1950 में ओम मंडली का स्थानांतरण राजस्थान के एकमात्र हिल स्टेशन माउण्ट आबू किया गया। उस वक्त केवल 350 भाई-बहनें ही इस संगठन के सारथी थे। 1950 में बाकायदा एक ट्रस्ट बनाकर ओम मंडली का नाम बदलकर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय रखा गया। इसकी प्रथम मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती को नियुक्त किया गया, जिन्हें प्यार से सभी मम्मा कहकर पुकारते थे। माउंट आबू की पावन धरा से पवित्र, राजयोगी ब्रह्माकुमार भाई-बहनें भारतीय आध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन का दिव्य संदेश लेकर देशभर में निकले। 'स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन' का यह महान संकल्प देखते ही देखते लोगों ने अंतर्मन से आत्मसात किया। इस नये और अनोखे ज्ञान को लोगों ने दिल से स्वीकारा, अपनाया और परमात्म राह पर चल पड़े। ब्रह्माकुमारीज़ के भारत सहित पूरे विश्व के 140 मुल्कों में करीब पांच हजार से भी ज्यादा सेवाकेन्द्रों के माध्यम से परमात्मा का संदेश दिया जा रहा है।

स्थानीय सेवाकेंद्र का पता-

पत्र-व्यवहार का पता-

संपादक ब्र.कु. कोमल, ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो. 9414172596, 6377090960

• प्रकाशक व मुद्रक : करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित • संपादक ब्र.कु. कोमल
• संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र • RNI No.: RAJHIN/2013/53539

www.shivamantran.com
Email shivamantran@bkivv.org
Madhuban news
Youtube- https://www.youtube.com/c/madhubannews

हीलिंग इफेक्ट ऑफ राजयोग...

दिल्ली से लेकर अमेरिका के डॉक्टर्स हारे

राजयोग के प्रयोग से ब्रेन का ट्यूमर हुआ ठीक

स्टोरी 14

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली।

नई दिल्ली के जीबी पंत हॉस्पिटल में प्रो. कॉर्डियोलाजिस्ट डॉ. मोहित गुप्ता ने विज्ञान को दी चुनौती

ब्रेन में ट्यूबर के बाद तीन साल दर्द में गुजरे। आखिर में डॉक्टर्स ने ऑपरेशन करना तय किया। लेकिन ऑपरेशन के छह माह बाद फिर ट्यूमर नजर आया। दिल्ली से लेकर अमेरिका के डॉक्टर्स की टीम ने हाथ खड़े कर दिए। दूर-दूर तक कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। ऐसे में राजयोग मेडिटेशन के प्रयोग ने सदा-सदा के लिए ब्रेन में ट्यूमर के सेल्स को खत्म कर दिया। यह देखकर डॉक्टर्स अचंभित रह गए।

यह कहना है नई दिल्ली के जीबी पंत हॉस्पिटल में प्रो. कॉर्डियोलाजिस्ट डॉ. मोहित गुप्ता का। डॉ. गुप्ता ने अपने जीवन में राजयोग मेडिटेशन का प्रयोग कर साइंस को भी चुनौती दे दी। साथ ही योग के प्रयोग से यह साबित किया कि यदि पूरे विश्वास के साथ राजयोग किया जाए तो शरीर और मन की हर बीमारी से मुक्त हो सकते हैं। आइए डॉ. मोहित से जानते हैं उनके जीवन का अद्भुत अनुभव...

20 मार्च 2003 का वह दिन जिसने मैंने जीवन को सदा के लिए बदल दिया। शाम के करीब 5.30 बजे मैं हॉस्पिटल से दो दिन बाद घर आया था। शाम 7.30 बजे अचानक तबीयत बिगड़ गई। पिताजी हॉस्पिटल लेकर गए और अगले दिन जब होश आया तो आईसीयू में पाया। रातभर डॉक्टर्स ने मेरे ब्रेन को डायग्नोसिस किया और पाया कि ब्रेन में एक इन्फेक्टेड मांस का टुकड़ा है, जिसे ट्यूबर क्लोसिस बताया। उस समय इस बीमारी के लिए पूरे विश्व में 19 दवाइयां उपलब्ध थीं जिनमें से 18 दवाइयां मेरे शरीर पर काम नहीं करती थीं। रोज मुझे 16 टेबलेट्स खानी पड़ती थीं। आठ सुबह और आठ शाम को। इतने इंजेक्शन लगे कि मेरे हिप्स छलनी हो गई। इस पूरी यात्रा में एक बात जो खास थी कि मुझे दर्द जरूर होता था लेकिन मैंने एक भी क्षण दुःख की अनुभूति नहीं की।

तीन साल दर्द के बाद 2005 में हुई सर्जरी

डॉ. गुप्ता ने बताया कि तीन साल असहनीय दर्द के बाद 20 जून 2005 में ब्रेन की सर्जरी की गई। इसके बाद मुझे लगा कि अब मैं पूरी तरह ठीक हूं। लेकिन एक संकल्प मेरे दिमाग में बार-बार आता था कि आखिर ऐसा हुआ क्यों? एक कॉर्डियोलाजिस्ट जिसने जीवन में जो चाहा, जब चाहा सब प्राप्त हुआ। जब मैंने खुद के बारे में गहराई से समझा तो पाया कि कहीं न कहीं मैंने राजयोग जीवनशैली अपनाने के बाद भी बैलेंस, संयम को खो दिया।

छह माह बाद फिर से ब्रेन में सेरिबैलम

ऑपरेशन को छह माह ही हुए थे कि फिर से मेरे ब्रेन में एक ट्यूमर आ गया। भारत से लेकर अमेरिका के डॉक्टर्स की टीम ने जांचें कि और कहा कि मेडिसिन के अलावा कोई उपाय नहीं है। मेडिसिन लेते हुए मुझे दो साल हो गए लेकिन कोई असर नहीं हो रहा था। उस वक्त मुझे राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करते हुए 15 साल हो चुके थे। मैं नियमित राजयोग ध्यान करता था।

संयम होता है जीवन का आधार

डॉ. गुप्ता ने बताया कि मेरा अनुभव है कि संयम जीवन का आधार होता है। आज इमरजेंसी की स्थिति में हमारी लाइफ चल रही है। सबेरे से लेकर शाम तक हम दौड़ते रहते हैं। मैंने पाया कि आज यदि हमें अपनी लाइफ को चैंज करना है तो अपनी सोच को चैंज करना होगा।

विश्वास की शक्ति सबसे बड़ी शक्ति

आज यदि हम जीवन में किसी भी क्षेत्र में, किसी भी काम में इसलिए फैल है कि हम पूरे अंतर्मन से उसमें विश्वास नहीं करते हैं। आज हम साइंस और जेनेटिक के एक्सपीरिमेंट अपने हॉस्पिटल में कर रहे हैं, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस को यूज करते हुए लोगों की उम्र को रिवर्स कर रहे हैं। साथ राजयोग मेडिटेशन की टेक्नीक को यूज करते हुए लोगों के तनाव को दूर करने के लिए उपयोग कर रहे हैं। कई लोगों में बदलाव आए हैं।

दादी गुलजार की प्रेरणा से बदला जीवन...

डॉ. मोहित ने बताया कि मैं परेशान होकर तत्कालीन अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी (दादी गुलजार) के पास गया और सारी प्राब्लम बताई। इस पर दादी ने मुस्कुराते हुए कहा कि मोहित तुम राजयोगी, योगी हो, क्यों नहीं इस बीमारी पर योग का प्रयोग करते हो। उन्होंने कहा कि ब्रह्ममुहूर्त में उठकर पानी को चार्ज करो, उसे सकाश दो कि इसमें परमात्मा की शक्तिशाली किरणें पड़ रही हैं और मेरी बीमारी ठीक हो रही है। मैं पूरी तरह से स्वस्थ हो गया हूं। **दादी के गाइडेंस पर मैंने जनवरी 2006 से पानी को अमृतवेला ब्रह्ममुहूर्त में 3 बजे सकाश देकर पीना शुरु किया।** इस दौरान मेरे साइंटिस्ट दोस्त ने कहा कि मोहित साइंस के जमाने में तुम किस चीज में विश्वास कर रहे हो। लेकिन मैंने दादी की बात पर पूरे विश्वास, आस्था और लगन से नियमित पानी को चार्ज करने पीने का प्रयोग जारी रखा। मैंने डेढ़ साल तक कोई स्कैन नहीं कराया। न किसी डॉक्टर को दिखाया। इस दौरान दोस्त कहते रहे तुम्हें टेस्ट कराना चाहिए। लेकिन मैंने कोई टेस्ट नहीं कराया। अप्रैल 2007 में जब ब्रेन की जांच कराई तो पूरी तरह से यह ट्यूमर गायब हो चुका था।

मेडिटेशन से दोनों ब्रेन में आती है कम्पलीट हार्मनी

साइंस ने यह प्रूफ किया है कि मात्र 15-20 मिनट के मेडिटेशन से हमारे ब्रेन में बदलाव आ जाता है। लेफ्ट ब्रेन और राइट ब्रेन में समन्वय, बैलेंस आ जाता है। मात्र 25 मिनट के मेडिटेशन से दोनों ब्रेन के अंदर कम्पलीट हार्मनी (सद्भाव) आ जाती है। ऐसा सिस्टम ज्यादा पावरफुल होता है। ये योग की शक्ति है, योग की पराकाष्टा है। कर्म से सिर्फ हमें 50 फीसदी सफलता मिल सकती है, क्योंकि हमारा लेफ्ट ब्रेन कर्म के अंदर एक्टीवेट होता है। लेफ्ट ब्रेन एनालिटिकल (विश्लेषाणात्मक) और लॉजिकल (तार्किक) है। राजयोग मेडिटेशन और योग का प्रयोग हमारे राइट ब्रेन को एक्टीवेट करता है। साथ ही समन्वयता लाता है। संपूर्ण हीलिंग के साथ हर क्षेत्र में सौ फीसदी सफलता मिलती है। यह हमारी बॉडी के आर्केस्टा की तरह कार्य करती है। जब एक संकल्प आत्मा और मन से पावरफुल जाता है तो हमारे शरीर के 50 खरब सेल्स अपनी इंटेलीजेंस को यूज करते हुए हमें हील कर देते हैं लेकिन इसका आधार है विश्वास। जब राजयोग पर विश्वास करके इसे यूज करते हैं तो संपूर्ण लाभ मिलता है।

भगवान का साथ...

भगवान बने साथी, पति के शरीर छोड़ने का दुख भूली

स्टोरी 15

शिव आमंत्रण, करनाल (हरियाणा)।

करनाल हरियाणा की सुनीता मदन का भगवान के साथ का अद्भुत अनुभव

पति के निधन के बाद करनाल की सुनीता मदन की जिंदगी जैसे वीरान हो गई थी लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ने के बाद उनके जीवन में फिर से खुशहाली आ गई और उस दर्द से बाहर निकल आई। सुनीता मदन के शब्दों में उन्हीं से जानते हैं कैसे राजयोग के उनका जीवन बदला।

उन्होंने बताया कि वर्ष 2013 में पति ने शरीर छोड़ा तो उस समय में बहुत दर्द, दुख में डूब चुकी थी। डेढ़ साल तक घर से बाहर नहीं निकली। एक दिन दोस्त ने ब्रह्माकुमारीज़ के बारे में बताया। राजयोग मेडिटेशन कोर्स करने के बाद जीवन की दिशा ही बदल गई। राजयोग के अभ्यास से दुख दूर हुआ और उस दर्द से बाहर निकल आई। पहले की तरह मैं फिर से हंसने, मुस्कुराने लगी। यह देखकर मेरा बेटा और पड़ोसी हैरान थे कि आखिर मुझमें इतना परिवर्तन कैसे और कहां से आया। लेकिन राजयोग मेडिटेशन और शिव बाबा का कमाल है कि मेरे जीवन में फिर से खुशहाली आ गई।

अमृतवेला लेती थीं बाबा से किरणें

राजयोग सीखने के बाद मैं नियमित अभ्यास करती हूं। रोज अमृतवेला शिव बाबा से योग में शक्तिशाली किरणें लेती हूं। अब मुझे हर पल यही महसूस होता है कि हर पल बाबा मेरे साथ हैं। कभी भी मुझे अकेलापन महसूस नहीं होता है। मुझे खुश देखकर बेटा दिल्ली पढ़ने चला। सब बाबा का कमाल है कि मेरा जीवन फिर से खुशनुमा हो गया। कोई भी बात मैं सोचती उसी समय वह पूरी हो जाती। एक दिन मैं अमृतवेला सो रही थी तो अचानक से बहुत तेज लाइट आई और पूरे कमरे में फैल गई और मैं उठकर बैठ गई। जिन दिन से मैं योग कर रही हूं उस दिन से कभी दुख में आंसू नहीं बहाए।

निश्चय की जीत...

योग से आंखों का एनीमिया हुआ ठीक, डॉक्टर बोले- यह तो चमत्कार है

स्टोरी 16

शिव आमंत्रण, बीना (मप्र)।

बीना की छाया पमनानी का योग के प्रयोग से दोबारा आंखों का विजन लौटा...

बीना की छाया पमनानी ने राजयोग मेडिटेशन का अपनी आंखों पर प्रयोग कर डॉक्टरों को हैरत में डाल दिया है। आंखों का एनीमिया ठीक होने पर भोपाल के डॉक्टर बोले- यह तो किसी चमत्कार से कम नहीं है। पमनानी ने बताया कि मैं 25 साल से राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कर रही हूं। मेरा बेटा और बेटी दोनों डॉक्टर हैं। वर्ष 2020 में पता चला कि आंखों में एनीमिया है। लगातार रोशनी कम होती जा रही थी। कई डॉक्टर्स को दिखाया लेकिन लेकिन दवाई का खास फायदा नहीं हो रहा था। इस पर मैंने राजयोग का प्रयोग शुरू किया। सुबह-शाम योग में विजुलाइज करती कि शिव बाबा की डीप ब्लू किरणें आ रहीं हैं और मेरी आंखों पर पड़ रही हैं। इससे आंखें स्वस्थ हो रही हैं। उनका विजन क्लीयर हो रहा है। डाइट का भी ध्यान रखा और दवाई भी लेती रही। कुछ ही महीनों के प्रयोग से बाबा का कमाल है कि दोनों आंखें पूरी तरह से ठीक हो गईं। विजन पहले की तरह साफ हो गया आज मैं बिना चश्मे के पढ़ सकती हूं।

भोपाल के डॉक्टर बोले- यह संभव कैसे है?

जब आंखें पूरी तरह ठीक हो गईं तो भोपाल के डॉक्टर को चेकअप कराया। उन्होंने चेकअप के बाद कहा कि यह कैसे संभव है। एनीमिया होने के बाद पूरी तरह से विजन क्लीयर होना किसी चमत्कार से कम नहीं है। फिर डॉक्टर ने पूरी दिनचर्या पूछी और योग के प्रयोग को गहराई से समझा। डॉक्टर हैरान थे कि मेडिटेशन से भी आंखों की खोई हुई रोशनी को वापस लाया जा सकता है।

मेडिटेशन और साइंस

जीवन का सार: आत्मा-परमात्मा दो चीजें ही सत्य हैं

स्टोरी 17

शिव आमंत्रण, शाजापुर (मप्र)।

कृषि वैज्ञानिक डॉ. जीआर अम्बावतिया बोले- कैड प्रोग्राम से बदला जीवन

मैं साइंटिस्ट हूं तो हर बात को विज्ञान की कसौटी पर परखने के बाद ही उस पर यकीन करता हूं। ब्रह्माकुमारीज़ में दिया जा रहा ज्ञान सत्य है। मैंने हर तरह से एनालिसिस किया है तो जीवन में यही जाना है कि आत्मा-परमात्मा दो चीजें ही सत्य हैं। जिसे तरीके से आत्मा-परमात्मा का ज्ञान और राजयोग मेडिटेशन सिखाकर ब्रह्माकुमारीज़ में व्यक्तित्व निर्माण का कार्य किया जा रहा है, ऐसा और किसी संगठन में नहीं है। साइंस का विद्यार्थी रहा तो उसमें बताते हैं कि ऊर्जा का स्थानांतरण होता है और परमात्मा ही ऊर्जा का स्रोत हैं। पवित्रता में सबसे बड़ी शक्ति है और ब्रह्माकुमारीज़ की ताकत यहां की पवित्रता है। मन-वचन-कर्म में जब संपूर्ण पवित्रता समाहित हो जाती है तो मनुष्य का व्यक्तित्व कुंदन की तरह प्रकाशवान हो जाता है। यह इंसान का काम नहीं यह ईश्वरीय शक्ति ही करा रही है। राजयोग के अभ्यास से जीवन आनंदमय बन गया है। यह कहना है शाजापुर में कृषि विज्ञान केंद्र पर प्रधान कृषि वैज्ञानिक के पद पर कार्यरत डॉ. जीआर अम्बावतिया का। आप वर्ष 2012 से ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर राजयोग का अभ्यास कर रहे हैं। विशेष चर्चा में आपने अपने जीवन और अध्यात्म से जुड़े अनेक अनुभवों को हमारे साथ सांझा किया। अम्बावतिया ने कहा कि 2012 में पहली बार राजगढ़ सेवाकेंद्र की ओर से माउंट आबू गया। परमात्मा का कमाल है कि सही समय पर उपचार मिलने से बच गया।

कैड प्रोग्राम से मिली जीवन को नई दिशा

2014 के पूर्व मैं ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ा था लेकिन इस ज्ञान को गहराई से नहीं समझा था। 2014 में कैड प्रोग्राम में भाग लेने के बाद विश्वास हो गया कि जरुर यहां कोई ईश्वरीय शक्ति है। तब से नियमित ब्रह्ममुहूर्त में मेडिटेशन कर रहा हूं। संयमित जीवन के साथ सात्विक भोजन करता हूं। परमात्मा और राजयोग का कमाल है कि बायपास होने के बाद भी 18 घंटे एक्टिव रहता हूं और काम करता हूं। दिनचर्या में अमृतवेला, मुरली, योग को पूरा फॉलो करता हूं। मेरी धर्मपत्नी (युगल) भी ज्ञान में हैं। कृषि विज्ञान केंद्र में आने वाले किसानों को प्राकृतिक खेती, यौगिक खेती के बारे में समझाइश देते हैं।

दृढ़ संकल्प

शादी के लिए 50 रिश्ते आए, लेकिन पवित्रता चुनी

स्टोरी 18

शिव आमंत्रण, जालंधर (पंजाब)।

ब्रह्माकुमार राकेश भाई ने परिवार के तमाम प्रलोभनों के बाद भी पवित्रता का मार्ग नहीं छोड़ा

जब मन में कुछ करने, कुछ बनने और तपस्या के मार्ग पर चलने का दृढ़ संकल्प हो तो लाख मुश्किलों के वाबजूद एक दिन मंजिल जरूर मिलती है। कुछ ऐसी ही कहानी है पंजाब जालंधर जिले के फिल्लौर तहसील अपरा के ब्रह्माकुमार राकेश भाई की। आप 19 साल की उम्र में ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ गए। परिवार, समाज में लोगों ने विरोध किया। शादी के लिए पचास से ज्यादा रिश्ते आए, पिताजी ने हर तरह से दबाव बनाया लेकिन मन में एक ही संकल्प था कि पवित्र जीवन ही जीना है। आज वहीं नाते-रिश्तेदार, समाज के लोग तारीफ करते नहीं थकते हैं। संत की तरह आदर-सम्मान करते हैं। आज आपका योगी-तपस्वी जीवन अनेकों के जीवन परिवर्तन का प्रेरणास्रोत बना हुआ है। बीके राकेश भाई (58) ने बताया कि 39 साल से राजयोग का अभ्यास कर रहा हूं। प्रतिदिन ब्रह्ममुहूर्त में 3.30 बजे से दिनचर्या शुरू हो जाती है। सुबह डेढ़ घंटे ध्यान करता हूं। मुरली क्साल के अपना व्यवसाय संभालता हूं। परमात्मा ज्ञान-योग से मनुष्य आत्माओं का भाग्य बनाने आए हैं। भाग्यशाली हूं कि शिव बाबा ने बच्चा बनाया।

तीन साल में हुआ निश्चय

बीके राकेश भाई ने बताया कि बीए की पढ़ाई के दौरान जब मैं ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ा तो मेरे मन में बहुत प्रश्न थे। मैं दीदियों से बहुत डिबेट करता था। सेंटर पर जो भी वरिष्ठ भाई-बहनें आते तो उनसे जिज्ञासाओं का समाधान करता था। तीन साल तक हर बात को सत्यता की कसौटी पर परखने के बाद मुझे निश्चय हो गया कि मैंने जो पवित्रता और राजयोग का मार्ग चुना है इससे बढ़कर कुछ नहीं हो सकता है। बाबा का कमाल है कि जिस कार्य को अपने हाथ में लिया, व्यवसाय सभी में दिनोंदिन सफलता मिलती गई। अनेक लोगों को परमात्मा का ज्ञान देने के निमित्त बना। अपना तन-मन-धन सब ईश्वरीय सेवा में सफल कर रहा हूं। बाबा ने ज्ञान से इतना भरपूर कर दिया है कि कोई भी व्यक्ति समस्या लेकर आता है तो उसका हर संभव समाधान हो जाता है। मन यही गीत बार-बार गाता है- पाना था सो पा लिया।

समाजसेवा की मिसाल

197 बार रक्तदान किया, लिम्का बुक में नाम दर्ज

स्टोरी 19

शिव आमंत्रण, चंडीगढ़ (पंजाब)।

चंडीगढ़ पुलिस में एसआई राकेश रसीला ने पेश की मिसाल, बोले- योग से गुस्सा हुआ शांत

चंडीगढ़ पुलिस में तैनात ट्रैफिक एसआई राकेश रसीला अब तक 197 बार रक्तदान कर चुके हैं। रसीला इंडियन पुलिस में सर्वाधिक रक्तदान करने वाले इकलौते पुलिस अधिकारी हैं। इस उपलब्धि पर आपके नाम लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में नाम दर्ज है। 20 सितंबर 1965 में जन्में रसीला ने पहली बार दसवीं की पढ़ाई के दौरान चहल में लगे एनसीसी कैंप में रक्तदान किया था। तब से शुरू हुआ यह सिलसिला आज भी जारी है।

शिव आमंत्रण से विशेष बातचीत में एसआई रसीला ने बताया कि रक्तदान करने से मुझे आत्मिक सुकून और शांति मिलती है। इसे लेकर वर्ष 2000, 2006, 2011, 2014 में चंडीगढ़ पुलिस प्रशासन की तरफ से स्टेट अवार्ड से भी नवाजा गया है। वहीं हाल ही में मेरा नाम 26 जनवरी 2024 के लिए राष्ट्रपति अवार्ड के लिए भी नामांकित किया गया है। इसके अलावा अब तक अपने खर्चे पर एक हजार से अधिक शवों का अंतिम संस्कार कर चुके हैं। वर्ष 1987 में 21 साल की उम्र में कांस्टेबल के रूप में पुलिस में भर्ती हुए थे। प्रत्येक व्यक्ति को रक्तदान जरूर करना चाहिए। इससे हमें कभी भी हार्ट अटैक, पैरालिसिस, ब्रेन हेमरेज नहीं हो सकता है। शरीर हमेशा जवां और स्वस्थ रहता है। रक्तदान और मानव सेवा मेरा जुनून है। ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ने के बाद जीवन का लक्ष्य मिल गया।

2015 से बदली जीवन की दिशा

एसआई रसीला ने बताया कि वर्ष 2015 में एक बार सेक्टर 33 सेवाकेंद्र की बीके भावना दीदी ट्रैफिक लाइन में राखी बांधने आईं। आपने ज्ञान सुनाया तो बहुत अच्छा लगा। फिर मैंने सात दिन का राजयोग कोर्स किया। जिस सवाल का जवाब मैं खोज रहा था और परमात्मा को पाने की जो चाह थी वह पूरी हो गई। मुझे सबसे ज्यादा सृष्टि चक्र के ज्ञान ने प्रभावित किया। यहां से सीखा है कि मनसा-वाचा-कर्मणा किसी को दुख नहीं देना है। रोज नियमित ब्रह्ममुहूर्त में राजयोग ध्यान, मुरली क्लास करता हूं। राजयोग से मेरा गुस्सा भी शांत हो गया है।

मेडिटेशन की नई विधा

30 साल से लिख कर कर रहे राजयोग ध्यान

स्टोरी 20

शिव आमंत्रण, दिल्ली।

न्यूट्रीशिनल एजवाइडर, काउंसलर बीके प्रमोद कुमार ने मेडिटेशन को लेखन से जोड़ा

ग्रेटर नोएडा के न्यूट्रीशिनल एजवाइडर, साइंस ग्रेजुएट और काउंसलर बीके प्रमोद कुमार पिछले 30 साल से लिखकर राजयोग मेडिटेशन कर रहे हैं। बीके प्रमोद बताते हैं कि वर्ष 1993 में 14 वर्ष की उम्र में मैं ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आया और तब से लेकर आज तक मैं लिख कर मेडिटेशन करता हूं। मैं रोज ब्रह्ममुहूर्त में 3.30 बजे से 5 बजे तक मेडिटेशन रुम में लिखकर योग कर रहा हूं। पिछले दस साल से शाम को 6.30 से एक घंटा लिख कर योग करता हूं। मेरा मानना है कि जो बात हम लिखते हैं तो हमारा मन और बुद्धि पूरी एकाग्रता के साथ उस पर फोकस करती है। साथ ही हमारा मन उसे जल्दी स्वीकार कर लेता है। योग के अब तक दर्जनों रजिस्टर भर दिए हैं। बता दें कि बीके प्रमोद प्योर वेलनेस प्रा. लि. कंपनी के फाउंडर हैं और कॉलेज, यूनिवर्सिटी, कॉर्पोरेट सेक्टर में मोटिवेशन सेशन लेते हैं। वर्तमान में आप स्वर्ण नगरी ग्रेटर नोएडा सेवाकेंद्र से जुड़े हैं और प्रभारी बीके ललिता दीदी के मार्गदर्शन में सेवाएं जारी हैं।

ज्योतिर्बिंदू का साक्षात्कार

बुलंद शहर में शीलू दीदी से ज्ञान मिला। 16 साल की उम्र में वर्ष 1995 में पहली बार परमात्म मिलन शिविर में आया। 19 जनवरी बाबा का ज्योतिर्बिंदु का साक्षात्कार हुआ। दादी के मस्तक में ज्योतिर्बिंदु बाबा को देखा जैसे मेरी आंखों में वह लाइट समा गई हो। तभी संकल्प किया कि जीवन पवित्र और ज्ञान-योग में बिताना है। बाबा ने कई सेंटर्स खुलवाने के निमित्त बनवाया।

युवा शक्ति

आज के ग्लैमर युग में बीके युवाओं का तपस्वी जीवन

स्टोरी 21

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

इन्फोसिस कंपनी में सॉफ्टवेयर इंजीनियर बीके पूजा युवाओं के लिए बनीं प्रेरणास्त्रोत...

मेन रोड से फ्लैट की दूरी चार मिनट की है। लेकिन तेज बारिश शुरू हो गई। सामने एक शॉप था तो मैं वहां चली गई। और मैं मन ही मन बाबा से बातें कर रही थी तो बाबा से कहा कि बच्चे की थोड़ी भी फिक्र नहीं है कि आप गाड़ी भेज दो। मैं कुछ सेकंड शांति से बैठी और शिवानी दीदी का अनुभव याद आया। उन्होंने योग का अनुभव बताया था जिसमें एक बार बारिश रुक गई थी। मैं बादलों से बातें कर रही थी। बाबा का कमाल है कि बारिश स्लो हो गई। मैं चार कदम ही आगे बढ़ी तो एक भाईजी ने कहा कि मैं आपको छोड़ दूं।

भुवनेश्वर में इन्फोसिस कंपनी में सॉफ्टवेयर इंजीनियर बीके पूजा ((इलेक्ट्रॉनिक्स एवं कम्युनिकेशन ब्रांच से बीटेक) ने बताया कि मेरी सफलता में परमात्मा शिव बाबा का अहम योगदान है। जीवन में शिव बाबा की मदद के अनेक अनुभव हैं। कैसे बाबा अपने बच्चों की संभाल करते हैं। मेरा आदर्श जीवन देखकर ऑफिस में सभी मेरे सहकर्मी अचंभित रहते हैं कि आज के ग्लैमरस युग में आप इतना त्यागी-तपस्वी जीवन जीते हैं। जब हम बाबा की श्रीमत प्रमाण चलते हैं तो हमारे आसपास के लोग, संबंध-संपर्क में आने वाले सभी हमारे व्यवहार, हमारे कर्म से प्रभावित होते हैं। इससे समाज में ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े भाई-बहनों के प्रति जहां अच्छी इमेज बनती है, वहीं बाबा की दुआएं मिलती हैं। मेरा प्रयास होता है कि हर कर्म बाबा की श्रीमत प्रमाण हो। कॉलेज में जहां अन्य युवा मौज-मस्ती में बिताते हैं वहीं मैंने कभी भी मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं किया।

मुस्लिम भाई की प्रेरक कहानी

परमात्मा का लाइट के रूप में हुआ साक्षात्कार, मीट-चिकन छूटा

स्टोरी 22

शिव आमंत्रण, रायपुर (छग)।

छत्तीसगढ़ रायपुर के मोहिबुल हुसैन ने राजयोग के प्रयोग से किए कई साक्षात्कार

बचपन से ही मैं अल्लाह की बहुत इबादत करता था। साथ ही अल्लाह की सेवा में मस्जिद, दरगाह में अपना ज्यादा समय लगाता था। मेरा ख्वाब था कि जीवन में एक बार अल्लाह का दीदार करना है। इसके लिए मैंने काफी इबादत की। लेकिन मेरी तलाश पूरी नहीं हो सकी। लेकिन वर्ष 2013 में ब्रह्माकुमारीज़ में राजयोग कोर्स करने के बाद जब मेडिटेशन शुरू किया तो मुझे परमपिता शिव परमात्मा का लाइट के रूप में साक्षात्कार हुआ। मेरे जीवन की 42 साल से जारी तलाश पूरी हो गई।

यह कहना है छत्तीसगढ़ रायपुर के मोहिबुल हुसैन का। हुसैन वर्ष 2013 में ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आए। आपके जीवन में आए सकारात्मक बदलाव आज अन्य लोगों के लिए प्रेरणा बना हुआ है। मधुबन न्यूज से विशेष चर्चा में हुसैन ने बताया कि मैं ब्रह्माकुमारीज़ के एमजी रोड सेवाकेंद्र पर राजयोग सीखने के लिए गया। वहां तीन दिन गया लेकिन मुझे जीवन से जुड़े सभी प्रश्नों के जवाब नहीं मिले।

इस पर वहां से कल्पना दीदी मुझे चौके कॉलोनी सेवाकेंद्र लेकर गईं। जहां ब्रह्माकुमारी दीदी ने सात दिन का कोर्स प्रारंभ किया। वहां कोर्स के दौरान दीदी ने कहा कि आप बाबा के कमरे में योग लगाइए। चूंकि इस्लाम में अल्लाह को नूर-ए-इलाही कहा गया है और किसी देहधारी की पूजा नहीं करते हैं। साकार में बैठ कर किसी को याद नहीं करते हैं। इसलिए मेरा मन इसे स्वीकार नहीं कर रहा था। इसके बाद भी मैंने निश्चय किया कि सात दिन का कोर्स पूरा करुंगा। ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान को पूरा समझूंगा।

और निराकार लाइट की दुनिया में खो गया

हुसैन ने बताया कि कोर्स के दौरान पांचवें दिन में ही मुझे सारा ज्ञान मिल गया, जिसे मैं इस्लाम में 42 साल से ढूंढ रहा था। कोर्स पूरा होने के बाद आठवें दिन मैं मुरली क्लास में बैठा। उस दिन बाबा को देखते-देखते एक अजीब सी दुनिया में खो गया। वहां मुझे अजीब शांति मिली। बाबा को देखने के बाद मैं एक लाल प्रकाश की दुनिया में जाता था। वहां अकेला रहता था और जो शांति की अनुभूति होती थी उसे शब्दों में बयां नहीं कर सकता। इस तरह मुझे कई बार शिव बाबा का लाइट के रुप में साक्षात्कार हुआ है।

अंतर्मन से आती थी आवाज...

मैं 15 साल दस फीट के दहकते अंगारों पर चला। चाकू-ब्लेड से अपने शरीर को भी काटता था। लेकिन मेरी अंतर्रात्मा कहती थी कि इस ब्लड को किसी को दे दिया जाए तो किसी का जीवन बच सकता है। जब मैं मौलाना साहब से कहता था कि यदि हम ब्लड डोनेट करें तो किसी का जीवन बच जाए लेकिन वह मुझे डांटते थे कि इस्लाम में इस तरह की बातें नहीं करना नहीं तो इस्लाम से खारिज हो जाओगे।

शादी में चिकन देखते ही हीनभाव आया और छोड़ दिया

कोर्स के दौरान पांचवे दिन एक सब्जेक्ट आया कि जैसा अन्न, वैसा मन, जैसा पानी वैसी वाणी। दीदी ने बताया कि आपको अंडा, मटन, मांस, मछली नहीं खाना है। खाने में शुद्धता लाइए, बहुत कुछ चैंजेस देखने को मिलगा। लेकिन यह बात आसानी से मेरे दिमाग में नहीं बैठी। इस पर मैंने गहन चिंतन किया। जब कोई गाली देता, छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा करता तो मैं सोचता था कि क्या यह अन्न का प्रभाव है। एक दिन दोस्त की शादी में गया। वहां चिकन देखते ही मन में अजीब सा हीन भाव आया। दूसरे दिन अन्न की शुद्धि पर मुरली चली। इस पर मैंने सबसे पहले बिरयानी का त्याग किया और बाद में अंडा, मीट, मटन सब छोड़ दिया।

योग में बाबा ने दी प्याज-लहसुन छोड़ने की प्रेरणा

जब मैंने मीट-मटन छोड़ दिया था। लेकिन प्याज-लहसुन खाता था। इस पर फिर दीदी ने कहा कि बाबा के बच्चे प्याज-लहसुन नहीं खाते हैं। इस पर मैंने अमृतवेला योग में बाबा से पूछा कि बाबा ये चीजें खाने के लिए आप क्यों मना करते हैं तो बाबा ने जवाब दिया कि बच्चे इन्हें खाने से शरीर में गर्मी आती है, इंद्रियां चलायमान-चंचल होती हैं तो इसमें मनुष्य दो तरह से विकर्म करता है। पहला क्रोध, गुस्सा के रूप में और दूसरा है काम वासना की तरफ प्रेरित होता है। इसलिए बाबा, बच्चों को इन्हें खाने के लिए मना करते हैं। क्योंकि देवी-देवताओं को शुद्ध-सात्विक अन्न का ही भोग लगाया जाता है। फिर एक साल के अंदर पूरी तरह से प्लाज-लहसुन का त्याग कर दिया। मैं अपने जीवन और अनुभव से कह सकता हूं कि ब्रह्माकुमारीज़ में दिया जा रहा आत्मा- परमात्मा का ज्ञान स्पष्ट और सत्य है। राजयोग ही वह जरिया है जिसके द्वारा हम परमात्मा से मिलन मना सकते हैं।

दस साल के योगाभ्यास में कई बार हुए साक्षात्कार

मुझे ज्ञान में चलते एक साल ही हुआ था कि मन में तीव्र संकल्प आया कि मुझे बाबा का साक्षात्कार करना है। हम दूर-दूर तक नहीं सोच सकते कि बाबा को देख सकते हैं। इस पर मुझे योग में प्रेरणा मिली कि रात में दो बजे उठकर आपको बाबा से रुहरिहान करना होगा। लगातार छह महीने तक रात में दो बजे से योग करना शुरू किया। इसके बाद एक दिन मुझे बाबा की लाइट का दिव्य साक्षात्कार हुआ। सफेद रोशनी दिखी। फरिश्ता स्वरूप में ब्रह्मा बाबा दिखे। सबसे बड़ी बात मैं जो भी सवाल बाबा से करता था तो वह बात दूसरे दिन मुरली में आ जाती थी। तो कहीं न कहीं मुझे लगता था कि मैं अल्लाह, शिव बाबा के बहुत करीब हूं। मैं 2014 से नियमित अमृतवेला 3-4 बजे उठकर योग करता करता हूं। दस साल के योगाभ्यास में मुझे कई बार परमात्मा का लाइट के रूप में साक्षात्कार हुआ। कभी ब्रह्मा बाबा फरिश्ते के रूप में दिखे।

ज्ञान की महिमा

ज्ञान सुनकर पहले ही दिन छूट गया नॉनवेज, सूक्ष्म वतन में दिखे बाबा

स्टोरी 23

शिव आमंत्रण, रुपनगर (पंजाब)।

जीवन में जब सत्य ज्ञान मिल जाता है तो बदलाव की शुरुआत वहीं से शुरू हो जाती है। ऐसा ही कुछ अनुभव है पंजाब के रुपनगर जिले के नंगल तहसील निवासी 69 वर्षीय रामयश सिंह का। आप सीनियर सेकंडरी स्कूल के प्रधानाचार्य के पद से सेवानिवृत्त हैं। शिव आमंत्रण से चर्चा में आपने राजयोग अपनाने के बाद जीवन में आए परिवर्तन और इस ज्ञान को लेकर विस्तार से चर्चा की। आप पिछले 22 साल से राजयोगी जीवनशैली के साथ जीवन को अपनाकर चल रहे हैं। आइए उन्हीं के शब्दों में जानते हैं उनकी जीवन कहानी-

वर्ष 2001 में मैं लेक्चरर था। गुस्सा इतना आता था कि विद्यार्थियों को उठा-उठाकर पटकता था। नॉनवेज से लेकर शराब, सिगरेट का आदी था। बेटा ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र जाता था तो उसके कई बार के आग्रह के बाद एक दिन मैं बिना मन के चला गया। वहां सेवाकेंद्र प्रभारी बीके पुष्पा दीदी ने सात दिन के राजयोग कोर्स के बारे में बताया। जब मैंने कोर्स शुरू किया तो पहले ही दिन नॉनवेज छोड़ने का संकल्प कर लिया। वहीं नशा और प्याज-लहसुन छह माह के अंदर छोड़ दिया और पूरी तरह से भोजन का शुद्धिकरण किया।

आत्मा का सेल्फ रियलाइजेशन हुआ

राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास से मुझे स्पष्ट रुप में आत्मा का सेल्फ रियलाइजेशन हुआ। ब्रह्माकुमारीज़ में स्पष्ट और तार्किक रुप से जो आत्मा और परमात्मा का सत्य ज्ञान दिया जाता है, इससे बढ़कर कुछ नहीं हो सकता। यहां स्पष्ट रुप से परमात्मा का सत्य परिचय मिलता है। मेरा मानना है कि मोक्ष की प्राप्ति करना है, मुक्ति पाना है तो इस ज्ञान से ही संभव है। क्योंकि राजयोग से लाइफ में परिवर्तन आता है। मेरी बड़ी बहन भी दस साल से ज्ञान में है। तीन बेटे हैं। मजला बेटा इग्लैंड में है बड़ा बेटा चंडीगढ़ में जॉब करता है। सबसे बड़ी बात मेरे घर में प्याज-लहसुन तक नहीं आता है। पूरा परिवार सात्विक भोजन करता है। मेरी युगल (धर्मपत्नी) भी कदम से कदम मिलाकर इस ईश्वरीय मार्ग पर चल रही हैं।

सीनियर सेकंडरी स्कूल के सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य बोले- राजयोग ने बदल दिया जीवन

यहां जाना परमात्मा सर्वव्यापी नहीं हैं...

पहले हम जानते थे कि परमात्मा सर्वव्यापी है। लेकिन यहां स्पष्ट और सत्य ज्ञान से पता चला कि परमात्मा सर्वव्यापी नहीं बल्कि परमधाम के निवासी हैं। हम कहते हैं कि आत्मा सो परमात्मा। आत्मा, परमात्मा का अंश है। लेकिन वास्तव में आत्मा परमात्मा का अंश नहीं बल्कि आत्मा के पिता, परमपिता, परमात्मा शिव हैं। जो अंतर पिता-पुत्र में होता है वहीं अंतर आत्मा-परमात्मा में है। यह सृष्टि चक्र पांच हजार वर्ष का है। इस ज्ञान में कहीं कोई अंधश्रद्धा की बात नहीं है। मेडिटेशन का अभ्यास जैसे-जैसे बढ़ता जाता है हमें आत्म ज्योति का साक्षात्कार होने लगता है।

स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन

शिव बाबा मिले तो सब मिल गया, अब जीवन की तलाश हो गई पूरी

स्टोरी 24

शिव आमंत्रण, ऊना (हिमाचल प्रदेश)।

मैंने बचपन से बहुत भक्ति की। पूरा जीवन सात्विक रहा। बचपन से ही कुछ प्रश्न दिमाग में थे जिनका जवाब नहीं मिल रहा था। दुनिया को बदलना चाहता था लेकिन कभी अपने को नहीं बदला। ब्रह्माकुमारीज़ में ज्ञान लेने के बाद मेरे जीवन, मृत्यु, संसार से जुड़े तमाम प्रश्नों के जवाब मिल गए। जिसकी तलाश में पूरा जीवन निकाल दिया वह पूरी हो गई।

यह कहना है 69 वर्षीय कांगड़ा केंद्रीय सहकारी बैंक से सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रबंधक सोमनाथ पुरी का। आप हिमाचल प्रदेश ऊना जिले की नगर परिषद संतोषगढ़ के निवासी हैं। पुरी ने चर्चा में बताया कि नंगल सेवाकेंद्र की बीके रीमा दीदी बैंक में 2010 से राखी बांधने आती थीं। मैं बहनों के प्रेम-स्नेहमय व्यवहार से बहुत प्रभावित था। इस पर मैंने 2012 में राजयोग मेडिटेशन का कोर्स किया। कोर्स के दौरान ही मुझे सारे प्रश्नों के जवाब मिल गए। सभी शंका-आशंकाओं का समाधान हो गया। जैसे-जैसे राजयोग का अभ्यास बढ़ता गया तो वर्ष 2014 तक प्याज-लहसुन छोड़ दिया।

स्वयं को बदला तो दुनिया बदली नजर आने लगी

पुरी ने कहा कि पहले मुझे काम की टेंशन हो जाती थी। किसी ने गुस्सा दिलाया तो पश्चाताप करते रहता था। लेकिन इस ईश्वरीय ज्ञान से टेंशन सदा-सदा के लिए दूर हो गई। किसी के अभद्र या गुस्सा दिलाने पर पश्चाताप का भाव खत्म हो गया। पहले मैं दुनिया को बदलना चाहता था लेकिन अपने को नहीं बदला। लेकिन यह ज्ञान सुनकर खुद की कमी-कमजोरियों पर अटेंशन देकर उन्हें दूर किया। ज्ञान में हमें पता चला कि जब तक हम अपने आप को नहीं बदलते हैं तब तक कुछ नहीं हो सकता है। जब तक हम अपना परिवर्तन नहीं करते हैं तो जीवन में जो चाहते हैं उसे प्राप्त नहीं कर सकते हैं। अब हर चीज को पॉजीटिव लेता हूं। ब्रह्माकुमारीज़ जाने पर लोगों ने बहुत भड़काया लेकिन मुझे अटल निश्चय था कि यह ज्ञान सत्य है।

सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रबंधक पुरी बोले- भक्ति के फल के रूप में परमात्मा मिल गए

अब एक शिव बाबा ही मेरा संसार है...

11 साल से नियमित अमृतवेला योग करता हूं। सेवाकेंद्र पर मुरली क्लास करना दिनचर्या में शामिल है। सुबह योग करने से सारे दिन के लिए हमारी आत्मा रुपी बैटरी चार्ज रहती है। अब हमें यही लगता है कि बाबा का परिचय मिल तो सब मिल गया है। एक बाबा ही संसार है। साल में एक-दो बार माउंट आबू बाबा के घर सेवा के लिए जाता हूं।

संपादकीय

अपने श्रेष्ठ संकल्प को पूरा करने में लगा दें पूरी ऊर्जा

पर्व-त्योहार और नए साल पर हम बड़े-बड़े संकल्प करते हैं। कुछ दिन उन पर अमल भी करते हैं। नए संकल्प के अनुसार हमारी दिनचर्या या आदत होती है। धीरे-धीरे समय के साथ हमारा वह संकल्प कमजोर पड़ने लगता है। एक दिन हम फिर से वही पुरानी दिनचर्या या जिंदगी जीने लगते हैं। इसके पीछे हम कभी गौर भी नहीं करते हैं कि आखिर क्यों उस संकल्प को मंजिल तक नहीं ले जा सके? क्यों उसे बीच में छोड़ना पड़ा? क्यों चंद दिनों के बाद हतोत्साहित हो गए? क्यों उसे पूरा करना हमें असंभव लगने लगा। दरअसल इसके समुचित पहलुओं पर नजर डालें तो एक बात निकलकर सामने आती है कि हम कोई भी नया संकल्प जल्दबाजी में, भावनाओं में आकर और उत्साह में आकर ले लेते हैं लेकिन वह पूरा कैसे होगा इसकी विधिवत प्लानिंग नहीं करते हैं। उस पर पर्याप्त अध्ययन और तैयारी नहीं करते हैं। जबकि होना यह चाहिए कि कोई भी नई आदत बनाने के लिए या हमारे द्वारा लिए गए किसी नए संकल्प को पूरा करने के लिए उसकी पूर्व प्लानिंग की जाए। उसे पूरा करने में किन-किन बाधाओं का सामना करना पड़ेगा और उन बाधाओं से कैसे निकलेंगे, किन परिस्थितियों में हमें उस संकल्प को साधने में सबसे ज्यादा संघर्ष करना पड़ता है, आदि बातों को गहराई से चिंतन के बाद एक डायरी में नोट करना जरूरी है। फिर पूरी तैयारी के साथ संकल्प करें और उसे पूरा करने में जी-जान लगा दें।

युवा दिवस

जीवन को नई राह दिखाते हैं स्वामी विवेकानंद के विचार

स्वामी विवेकानंद बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। बाल्यावस्था से स्वामी विवेकानंद को अध्यात्म के प्रति गहन रुचि थी। उनका जन्म पश्चिम बंगाल में कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पिता संस्कृत और फारसी भाषा के विद्वान थे। महज 25 वर्ष की आयु में स्वामी जी के पिता सन्यासी बन गए। माता जी देवों के देव महादेव की भक्त थीं। हर समय शिव भक्ति में लीन रहती थीं। अत: विवेकानंद जी को बचपन से ईश्वर में अगाध श्रद्धा थी। स्वामी जी स्वयं प्रतिदिन ईश्वर की भक्ति करते थे। रामकृष्ण परमहंस जी के संपर्क में आने के पश्चात स्वामी जी मां काली के उपासक बन गए। मां काली की कृपा-दृष्टि से स्वामी जी वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली गुरु बने। उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं। युवाओं को स्वामी जी के विचार जीने की नई राह देते हैं। स्वामी विवेकानंद जी के पदचिन्हों पर चलकर व्यक्ति अपने जीवन में ऊंचा मुकाम हासिल कर सकता है। आइए, स्वामी जी के अनमोल विचार जानते हैं-

स्वामी जी के अनमोल विचार...

- संगति आप को ऊंचा उठा भी सकती है और यह आप की ऊंचाई से गिरा भी सकती है। इसलिए संगति अच्छे लोगों से करें।
- उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाए। तुम्हें कोई पढ़ा नहीं सकता, कोई आध्यात्मिक नहीं बना सकता। तुमको सबकुछ खुद अंदर से सीखना है। आत्मा से अच्छा कोई शिक्षक नहीं है।
- सब कुछ खोने से ज्यादा बुरा उस उम्मीद को खो देना जिसके भरोसे हम सब कुछ वापस पा सकते हैं।
- पहले हर अच्छी बात का मजाक बनता है। फिर विरोध होता है। अंत में उसे स्वीकार कर लिया जाता है।
- जिस प्रकार केवल एक ही बीज पूरे जंगल को पुनर्जीवित करने के लिए पर्याप्त है। उसी प्रकार एक ही मनुष्य विश्व में बदलाव लाने के लिए पर्याप्त है। ये मनुष्य आप हो सकते हैं।
- बहुत सी कमियों के बाद भी हम खुद से प्रेम करते हैं, तो दूसरों में एक कमी से कैसे घृणा कर सकते हैं।
- अगर धन दूसरों की भलाई करने में मदद करें, तो इसका कुछ मूल्य है। अन्यथा ये सिर्फ बुराई का ढेर है। इससे जितना जल्दी छुटकारा मिल जाए, उतना बेहतर है।

ज्ञान बोध द्वारा सत्य दर्शन से आध्यात्मिक उपलब्धि

जीवन का मनोविज्ञान भाग - 66

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

आबू रोड (राजस्थान)।

जीवन में कर्मयोग संपादित करते हुए स्वयं को आध्यात्मिक पुरुषार्थ की शक्ति से सदा, कर्म के संबंध से सुरक्षित रखने की उच्चतम प्राप्ति आत्मा के कर्मातीत अवस्था का सुखद परिणाम है जो आत्मिक सम्पन्नता के स्थायित्व को प्रतिपादित करता है। अव्यक्त स्वरुप की आत्मिक उपलब्धि जीवन की सर्वोच्चता का जीवंत प्रमाण है जो राजयोग से मौन की ओर गतिशीलता को सुनिश्चित करके आत्मा की सम्पूर्ण पवित्रता के व्यावहारिक परिदृश्य को स्थापित कर देता है। सर्वगुण सम्पन्नता की व्यावहारिकता को आत्मानुभूति के माध्यम से सदा आत्महित की संलग्नता के सानिध्य में आत्मगत चेतना की चेतनता को बनाए रखना, जीवन के परिष्कृत स्वरुप हेतु किया जाने वाला 'आत्म केन्द्रित' स्वाध्याय होता है ।

आत्मज्ञान अभ्युदय की नैसर्गिक अनुभूति : दिव्य गुणों से एवं शक्तियों से सुसज्जित मानव आत्माएँ सदा आत्मज्ञान के अभ्युदय की नैसर्गिक अनुभूति से गतिशील रहती हैं और अन्तर्मुखी अवस्था के लिए पुरुषार्थ करते हुए राजयोग का अनुकरण करके मौन स्वरुप में परिवर्तित हो जाती हैं । जीवन में आत्मज्ञान के प्रस्फुटित स्वरुप से चेतना की चेतनता को संपूर्ण संचेतना की व्यापकता के साथ अनुभव किया जा सकता है जिसमें - निमित्त , अकर्ता रुप का ज्ञायक भाव ही उपस्थित रहता है जो आत्मानुभूति की स्वतंत्रता को प्रतिपादित करता है । मनुष्य जन्म की सौभाग्यशाली स्थिति को सामर्थ्यवान अवस्था में परिणित करने हेतु आत्मबल का सहारा लिया जाता है जो आत्मिक शक्तियों की उपयोगिता को - मन , वचन एवं कर्म के सात्विक स्वरुप से आत्मसात करने के प्रबल पुरुषार्थ में सुनिश्चित किया जाता है ।

आत्मज्ञान के अभ्युदय होने पर आत्मिक बोधगम्यता का परिवेश अभिवृद्धि को प्राप्त होते हुए, आत्मानुभूति के वृहद् परिदृश्य की ओर गतिशील होता है जहां से अतिइन्द्रिय सुख एवं शाँति की गहन अनुभूति, जीवात्मा द्वारा किया जाना सहज हो जाता है। जीवात्मा जब स्वयं को स्वानुभूति के रहस्यमयी स्वरुप में प्राप्त कर लेती है तब उसकी धन्यता का पक्ष आत्मानंद के संदृश्य परिलक्षित होने लगता है और वह आत्मानुभूति से परमात्मानुभूति की ओर अग्रसर हो जाती है ।

सत्य दर्शन का आध्यात्मिक दृष्टिकोण: जीवन के व्यापक परिप्रेक्ष्य में मातृ देवो भव:, पितृ देवो भव:, आचार्य देवो भव:, सत्यं वद , धर्म चर " का अनुष्ठान करते हुए जब मानव जाति गतिशीलता की ओर अभिमुखित होती है तब ' सत्य दर्शन ' का अलौकिक स्वरुप मानवीय संवेदनशीलता के रुप में प्रस्फुटित होता है । आत्मगत स्थिति की वास्तविकता को उसके मूलभूत अस्तित्व गुण अजर , अमर , अविनाशी , अचल , अडोल एवं स्थितप्रज्ञ के नैसर्गिक रुप में ही स्वीकारना - ' सत्य दर्शन ' के प्रति श्रध्दावान होने की परिणिति है जिसमें आत्मा के स्वमान , स्वरुप एवं स्वभाव के अनुसार जीवन के व्यावहारिक पक्ष को पूर्णत: आत्मसात करने की जीवंतता सन्निहित रहती है । सत्य दर्शन का आध्यात्मिक दृष्टिकोण सदा ही लौकिक, अलौकिक एवं पारलौकिक स्वरुप के मध्य निर्धारित अन्तराल को मान्यता प्रदान करता है और स्वाध्याय में प्रमुख एवं गौण के अंतर्गत ' भेद - विज्ञान ' का अनुपालन करते हुए आत्म तत्व का विश्लेष्णात्मक अध्ययन आत्म कल्याण के संदर्भ तथा प्रसंग में किया जाता है ।

आत्मिक संपन्नता के व्यावहारिक परिदृश्य

धर्म एवं कर्म के विधिवत निर्वहन से 'उपराम स्थिति' के निर्माण की पूर्णता चेतना का परिष्कृत स्वरुप है जिसमें जीवात्मा, कर्मबन्धन से मुक्त होकर आत्म वैभव की सत्यता का सहज अनुभव करती है। जीवन में कर्मयोग संपादित करते हुए स्वयं को आध्यात्मिक पुरुषार्थ की शक्ति से सदा , कर्म के संबंध से सुरक्षित रखने की उच्चतम प्राप्ति आत्मा के कर्मातीत अवस्था का सुखद परिणाम है जो आत्मिक सम्पन्नता के स्थायित्व को प्रतिपादित करता है। अव्यक्त स्वरुप की आत्मिक उपलब्धि जीवन की सर्वोच्चता का जीवंत प्रमाण है जो राजयोग से मौन की ओर गतिशीलता को सुनिश्चित करके 'आत्मा की सम्पूर्ण पवित्रता' के व्यावहारिक परिदृश्य को स्थापित कर देता है । सर्वगुण सम्पन्नता की व्यावहारिकता को आत्मानुभूति के माध्यम से सदा आत्महित की संलग्नता के सानिध्य में 'आत्मगत चेतना की चेतनता' को बनाए रखना, जीवन के परिष्कृत स्वरुप हेतु किया जाने वाला 'आत्म केन्द्रित' स्वाध्याय होता है । जीवात्मा द्वारा प्रकृति के ' पंच तत्वों को पावन ' बनाने की सेवा का उत्तरदायित्व, आत्मिक सम्पन्नता के व्यावहारिक स्वरुप को 'आभारयुक्त उदारता के संवेदनशील दृष्टिकोण' से पूर्णता प्रदान करने में मददगार सिद्ध होता है । आत्मिक भाव, भासना के सानिध्य में निज, निधि-निजानंद के मंगल स्वरुप की अलौकिक चेतना सत्यम शिवम सुन्दरम की पारलौकिक विराटता में सत, चित्त, आनंद अर्थात सच्चिदानंद की अनुभूति में सम्बद्ध हो जाती है ।

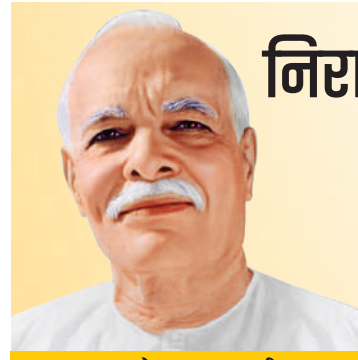

अव्यक्त आरोहण: 18 जनवरी 1969
(55वां पुण्य स्मृति दिवस)
पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा,
साकार संस्थापक, ब्रह्माकुमारीज़

निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी... ब्रह्मा बाबा

नई राहें

बीके पुष्पेंद्र, संयुक्त संपादक
शिव आमंत्रण, शांतिवन

आबू रोड (राजस्थान)। निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी... ब्रह्मा बाबा के ये तीन अंतिम शब्द थे। साधारण रहते हुए असाधारण कैसे बन सकते हैं यह बाबा ने अपने जीवन से सिखाया है। कर्मों से दिव्यता और महानता का पाठ पढ़ाती आपकी व्यवस्थित दिनचर्या, प्रत्येक आत्मा के प्रति शुभ संकल्पों से भरपूर विराट सोच आपकी फरिश्ता स्थिति दिखाती थी। विपरीत परिस्थिति में सदा शांत मन, स्थिर बुद्धि, और मिठास से भरपूर व्यवहार आपके तपस्या को बयां करता था। आपके व्यक्तित्व के बारे में लिखना मतलब सूर्य को दीपक दिखाना है। फिर भी बाबा के व्यक्तित्व में से कुछ दिव्य गुणों के बारे में यहां चर्चा करेंगे-

निश्चय और निश्चिंत: ब्रह्मा बाबा को जब ज्योतिस्वरुप, परमपिता परमात्मा के दिव्य साक्षात्कार हुए तो उन्हें पलभर में यह अटूट निश्चय हो गया कि अब मुझे शिव बाबा के बताए अनुसार विश्व कल्याण और नवयुग की स्थापना के कार्य में आगे का जीवन जीना है। बिना देर किए उन्होंने सारा कारोबार समेटा और विश्व शांति की राह पर चल पड़े। लक्ष्य बड़ा था लेकिन एक बल, एक भरोसे के साथ विपरीत परिस्थिति में भी सदा निश्चिंत भाव से आगे बढ़ते रहे। मन में कभी रिंचक मात्र भी संशय और प्रश्न नहीं आया।

संतुलन: बाबा की सुबह से लेकर रात तक की दिनचर्या एक आदर्श, महान और दिव्य व्यक्तित्व की निशानी थी। सोच से लेकर हर कर्म में उदाहरणमूर्त बनकर बाबा ने बच्चों के सामने उदाहरण पेश किया। हर कार्य एक्यूरेट, परफेक्ट कैसे किया जा सकता है यह बात बाबा के एक-एक कर्म में दिखती थी। ज्ञान-योग-सेवा-धारणा का अद्भुत संतुलन और समन्वय था।

एकांतप्रिय: बच्चों को गाइड करते, ज्ञान सुनाते भी सदा एकांतप्रिय रहते। सबके बीच रहते भी सदा अव्यक्त, विदेही, उपराम अवस्था रहती। कम बोलो, धीरे बोले, मीठा बोलो की मिसाल थे। अमृतवेला दो बजे से योग करना और एकांत में रहना दिनचर्या में शामिल था।

साक्षीभाव: बाबा के समक्ष कितने विघ्न, परीक्षाएं आईं लेकिन सदा कहते थे बच्चे नथिंग न्यू। बाबा ने प्रत्येक घटना और सीन को साक्षीभाव से देखा। कभी भी न खुद विचलित हुए और न ही बच्चों को विचलित होने दिया। बाबा कहते- ड्रामा का हर सीन कल्याणकारी है। प्रैक्टिकल में हमें सिखाया कि सुख-दुख में भी सदा एकसमान, एकरस अवस्था को कैसे बनाए रख सकते हैं।

रॉयल और साधारण: बाबा का रहन-सहन, खान-पान बहुत साधारण था। लेकिन उतना ही रॉयल भी। बच्चों को एक-एक कर्म से सिखाया कि उसे रॉयल कैसे कर सकते हैं। उनके संपर्क में आने वाली प्रत्येक आत्मा को दिव्यता और महानता की अनुभूति होती थी।

पवित्र विचार: कोई बच्चे में कितने भी अवगुण हो लेकिन बाबा ने सदा सभी में सद्गुण ही देखे। विचार इतने पवित्र, निर्मल थे कि सदा हर एक आत्मा के प्रति शुभभावना-शुभकामना, रहम भाव, कल्याण का भाव रखते हुए सदा श्रेष्ठ, महान चिंतन में ही रहते थे।

निमित्त भाव-निर्माण भाव: नई दुनिया के स्थापना के कार्य में युगपुरुष की भूमिका निभाने और परमात्मा के संदेशवाहक बनने के बाद भी बाबा खुद को निमित्त मात्र मानते थे। वह सदा कहते थे- करनकरावनहार करा रहा है। इतने विशाल व्यक्तित्व होने के बाद भी कभी अभियान नहीं रहा। उन्होंने कभी स्त्री-पुरुष, अमीर-गरीब, छोटा-बड़ा किसी में भेद नहीं किया। हमेशा बच्चों को आगे बढ़ाया। आपकी विराट सोच का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि खुद पीछे रहकर माताओं-बहनों को जिम्मेदारी सौंपी।

तपस्वी स्थिति: एक तपस्वी, योगी आत्मा के सारे गुण आपमें थे। कर्म करते भी सदा उपराम स्थिति, व्यक्त में रहते अव्यक्त स्थिति, साधारण में रहते असाधारण कर्म आपके जीवन में था। दिन-रात शिव बाबा की याद में मग्न और योगयुक्त अवस्था में रहते। बाबा का बीमारी में भी चेहरा सदा खुशनुमा और मुस्कुराता रहता। पिता की तरह समझाते, शिक्षक की तरह शिक्षा देते, गुरु के रुप में गाइड बनकर साथ देते। इस तरह पिता, शिक्षक, गुरु का संबंध तीनों रुप में बाबा ने बच्चों का साथ निभाया।

राष्ट्रपति ने किया 'नई भारत के लिए नई शिक्षा' राष्ट्रीय अभियान का शुभारंभ

शिक्षा के साथ मूल्य और नैतिक शिक्षा का समावेश होना अति आवश्यक : राष्ट्रपति

शिव आमंत्रण, संबलपुर (ओडिशा)

ब्रह्माकुमारीज़ के पावन सरोवर रिट्रीट सेंटर में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 'नई भारत के लिए नई शिक्षा' राष्ट्रीय अभियान का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में राष्ट्रपति ने कहा कि परिवार से ही मनुष्य की शिक्षा आरंभ होती है और मां ही हमारी पहली शिक्षक है। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए। शिक्षा के साथ-साथ मानवीय मूल्य एवं नैतिक शिक्षा का समावेश होना अति आवश्यक है। नई शिक्षा नीति भारत को पुनः विश्व गुरु की पदवी से सुशोभित करेगा। ब्रह्माकुमारीज विश्व स्तर में मानव समाज के कल्याण अर्थ आध्यात्मिक शिक्षा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत है। ब्रह्माकुमारी संस्था भारत सरकार के नशा मुक्त अभियान, जैविक खेती सहित सामाजिक जागरण कार्यक्रमों में प्रमुख सहयोगी है।

राज्यपाल रघुवर दास ने कहा कि आधुनिक और विकसित भारत के लिए आध्यात्मिक शिक्षा आवश्यक है। ब्रह्माकुमारीज़ इस दिशा में सबसे आगे है। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने कहा कि बच्चों के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) से अधिक ह्मन इंटेलिजेंस (HI) जरूरी है। माउंट आबू से पधारीं शिक्षा विभाग की उपाध्यक्षा राजयोगिनी बीके शीलू दीदी ने कहा कि भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए इंटेलिजेंस कोशेंट IQ के साथ स्प्रीचुअल कोशेंट (SQ) को बढ़ाना जरूरी है। पश्चिम ओडिशा की सबजोन निदेशिका राजयोगिनी बीके पार्वती दीदी ने स्वागत किया। कार्यक्रम में चार हजार से अधिक भाई-बहन उपस्थित थे। प्रारंभ में उड़ान ग्रुप के बच्चों ने संबलपुरी गीत पर स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया। राष्ट्रपति ने बहनों को शिव ध्वज और कलश देकर 'नूतन भारत के लिए नूतन शिक्षा' कार्यक्रम का शुभारंभ किया। विधायक नाउरी नायक एवं कटक से बीके नथमल भाई भी उपस्थित रहे। संचालन बीके डॉ. लीना दीदी ने किया।

नि :स्वार्थ सेवा के लिए वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके चंद्रिका दीदी को धरती रत्न पुरस्कार से नवाजा

शिव आमंत्रण, अहमदाबाद।

राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने ब्रह्माकुमारीज़ के कला एवं संस्कृति प्रभाग की अध्यक्ष और युवा प्रभाग की उपाध्यक्षा बीके चंद्रिका दीदी को सरदार वल्लभभाई पटेल मेमोरियल ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में धरती रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया। यह कार्यक्रम आशीर्वाद फाउंडेशन की ओर से आयोजित किया गया था। इस दौरान राज्यपाल ने मानव सेवा के लिए कार्य करने वाली 14 विभूतियों को धरती रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया। बता दें कि राजयोगिनी बीके चंद्रिका दीदी ने अपना पूरा जीवन लोगों के कल्याण और समाज सेवा के लिए समर्पित कर दिया। आपके सान्निध्य में देशभर में युवा प्रभाग द्वारा देशव्यापी अभियान वर्षों से चलाए जा रहे हैं। मानव कल्याण के लिए अभियान जारी हैं।

राजयोगी बीके डॉ. गुरचरण सिंह टाइम्स ऑफ इंडिया क्रूसेडर्स ऑफ हेल्थ पुरस्कार से सम्मानित

शिव आमंत्रण, ग्वालियर (मप्र)।

केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने ब्रह्माकुमारीज़ में समर्पित रूप से सेवाएं दे रहे राजयोगी बीके डॉ. गुरचरण सिंह को टाइम्स ऑफ इंडिया क्रूसेडर्स ऑफ हेल्थ पुरस्कार से सम्मानित किया। कार्यक्रम द टाइम्स ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित किया गया था। उन्हें यह अवार्ड एक्सीलेंस इन एनेस्थिसिया विथ स्प्रीचुअलिटी के क्षेत्र में प्रदान किया गया। नई दुनिया समाचार पत्र द्वारा भी डॉ. गुरचरण सिंह को स्वास्थ्य क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करने पर महापौर डॉ. शोभा सिंह सिकरवार एवं एसपी राजेश सिंह चंदेल ने नई दुनिया चिकित्सक सम्मान-2023 से सम्मानित किया।

मुख्यमंत्री का किया स्वागत

रायपुर (छग)। छत्तीसगढ़ के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री विष्णु देव साय को रायपुर सेवाकेन्द्र की संचालिका बीके सविता दीदी ने उनके निवास पर तिलक लगाकर और पुष्पगुच्छ भेंटकर स्वागत किया। साथ ही मुख्यमंत्री चुने जाने पर बधाई दी। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री साय जब प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष थे तब से ही वह संस्थान के संपर्क में हैं।

नशामुक्त हरियाणा अभियान का मुख्यमंत्री ने किया शुभारंभ

शिव आमंत्रण, पानीपत (हरियाणा)।

ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान मानसरोवर रिट्रीट सेंटर में मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर ने ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल विंग और भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे 'नशा मुक्त भारत अभियान' के अंतर्गत 'नशा मुक्त हरियाणा अभियान' का झंडी दिखाकर शुभारंभ किया। यह अभियान पानीपत से शुरू होकर हरियाणा के भिन्न-भिन्न जिलों में जाकर लोगों को नशा मुक्ति के लिए जागरूक करेगा। मुख्यमंत्री खट्टर ने कहा कि परमात्मा के साथ लगन इस नशे की आदत से दूर कर सकती है। इसलिये ज्यादा से ज्यादा लोगों को ध्यान-योग के मार्ग पर लाने का प्रयास किया जाना चाहिए। यह अभियान चलाकर ब्रह्माकुमारीज़ ने बड़ा सराहना का कार्य किया है। इस श्रेष्ठ कार्य में जब बीके बहनें आगे आएंगी तो उनकी प्रेरणा और शक्ति से नशा करने वाले युवा सहजता पूर्वक इससे मुक्त होंगे।

डॉ. प्रताप मिड्ढा ने कहा कि अभियान में प्रदर्शनी के चित्रों से सजी एक बस साथ रहेगी। स्कूल, कॉलेज व यूनिवर्सिटी में जाकर युवाओं को जागरूक किया जाएगा। राज्यसभा सांसद कृष्णलाल पवार ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ समाज के कल्याण में अहम् भूमिका है। इस दौरान बीके भारत भूषण, राजयोगिनी सरला दीदी, राजयोगिनी पुष्पा दीदी, बीके दिया बहन ने भी संबोधित किया। संचालन बीके शिवानी बहन ने किया।

भगवान के दूत जब लोगों को शिक्षा देंगे तो उसका असर होगा: राज्यपाल

शिव आमंत्रण, चंडीगढ़ (पंजाब)।

टैगोर थिएटर में ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रम में पंजाब के राज्यपाल और चंडीगढ़ के प्रशासक बनवारीलाल पुरोहित ने नशामुक्त पंजाब अभियान का उद्घाटन किया। राज्यपाल पुरोहित ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था जिसकी सेवाएं जन कल्याण के लिए समर्पित हैं, आज इस संस्था के भाई बहन सभी ऋषि-मुनियों के समान हैं जो समाज में जागृति ला रहे हैं और आगे भी लाते रहेंगे। ब्रह्माकुमारी भाई-बहन जब किसी को इस नशे से मुक्त होने का संदेश देंगे तो अवश्य ही उनके कहे शब्दों में वो ताकत होगी जिसका सम्मान किया जाएगा। भगवान के दूत जब लोगों को शिक्षा देंगे तो उसका असर होगा ही। ब्रह्माकुमारी संस्था की तरफ से जन कल्याण हेतु जनता को जागृत करने की जो कोशिश की जा रही है, वह सराहनीय है। इस संस्था ने धर्म की जड़ को संभाल रखा है। धर्म को सींचने का काम ये संस्था बखूबी कर रही है।

जयपुर से पधारीं राजयोगिनी बीके सुषमा दीदी ने कहा कि दान आसान है, कोई भी कर सकता है लेकिन पुण्य आपके मन की शुभ भावनाओं के संकल्प से आता है। सदा कल्याणकारी सोच ही पुण्य है। नॉर्थ ज़ोन की निदेशिका बीके प्रेम दीदी, बीके उत्तरा दीदी, मेडिकल विंग के सचिव बनारसीलाल शाह ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन बीके अनीता दीदी ने किया।

ओआरसी में अखिल भारतीय भगवद् गीता महासम्मेलन आयोजित, बड़ी संख्या में साधु-सन्त और महात्मा हुए शामिल

भारत ने सिखाई विश्व को श्रेष्ठ जीवन पद्धति: स्वामी धर्मदेव

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम।

भारत ने विश्व को जीवन जीना सिखाया। ब्रह्माकुमारीज़ में आकर शान्ति के स्वर सुनाई देते हैं। उक्त उद्गार पटौदी, हरी मंदिर के महामंडलेश्वर स्वामी धर्मदेव महाराज ने ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर में आयोजित तीन दिवसीय अखिल भारतीय श्रीमद भगवद्गीता महासम्मेलन के उद्घाटन सत्र में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था मानव को देवता बनाने का श्रेष्ठ कार्य कर रही है। भारत ने विश्व को आध्यात्मिकता का मूलमंत्र दिया। विश्व शान्ति के लिए ब्रह्माकुमारीज़ अदभुत भूमिका निभा रही है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भी अपना शुभकामना संदेश भेजा।

हरिद्वार से आए महामंडलेश्वर दिनेशानंद भारती महाराज ने कहा कि ईश्वर कभी भी गर्भ से जन्म नहीं लेते हैं। गीता नव जीवन का निर्माण करती है। गीता का ज्ञान हमें अविनाशी तत्व की ओर ले जाता है। ये ज्ञान विराट संसार से सूक्ष्म ईश्वर की तरफ ले जाने वाला है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था गीता ज्ञान के रहस्य को सम्पूर्ण विश्व में फैला रही है। गुरुग्राम से महामंडलेश्वर स्वामी दुर्गेशानंद महाराज ने कहा कि मनुष्य जीवन सर्वश्रेष्ठ है। कर्म में अकर्ता भाव का अनुभव करना ही सबसे बड़ी बुद्धिमानी है। कई बार जो जैसा दिखाई देता है, वैसा होता नहीं। इसी प्रकार दिखाई देने वाला संसार भी वैसा नहीं है। अज्ञान की स्थिति में हमें चीज़ें वैसे ही दिखाई देते हैं। आत्म ज्ञान के द्वारा ही सतयुग का उदय होता है।

युगांडा में भारत के उच्चायुक्त उपेंद्र सिंह रावत ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ समूचे विश्व में शांति और सौहार्द्र का संदेश दे रही है। गीता सबको जोड़ती है। क्योंकि गीता एक सार्वभौमिक संदेश देती है। गीता एक आध्यात्मिक ग्रंथ है। ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी बीके बृजमोहन ने कहा कि गीता ज्ञान को सही परिप्रेक्ष में समझने की जरूरत है। जिस समय परमात्मा ने गीता सुनाई, उसके बहुत समय पश्चात गीता को धर्मग्रंथ का रूप दिया गया। गीता शास्त्र वास्तव में भगवान द्वारा सुनाए गए ज्ञान का यादगार है। बहुत समय के बाद लिखे जाने के कारण गीता ज्ञान का भाव परिवर्तन हो गया। गीता ज्ञान से ही सतयुग की स्थापना हुई।

पवित्रता से नूतन विश्व की संकल्पना संभव

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके ऊषा दीदी ने कहा कि साधु-महात्माओं के कारण ही भारत भूमि आज तक थमी हुई है। श्रीमद्भगवत गीता ही ऐसा शास्त्र है, जिसमें भगवानुवाच लिखा है। गीता में परमात्म अवतरण की जो विधि बताई है, वो वास्तव में अलौकिक और विचित्र है। पवित्रता के आधार से ही नए विश्व की संकल्पना की जा सकती है। परमात्मा ही आत्मा को पवित्र बनने की शक्ति प्रदान करते हैं। ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी आशा दीदी, महामंडलेश्वर स्वामी अभिषेक चैतन्य, स्वामी गणेशानन्द महाराज, स्वामी त्रिदंडी चिन्ना जीयर, रामाकृष्ण मिशन के स्वामी सर्वलोकानंद, उत्कल विश्व विद्यालय की पूर्व कुलपति मधुमिता दास ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, भोपाल। मध्य प्रदेश के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव का सुख शांति भवन की डायरेक्टर राजयोगिनी नीता दीदी ने शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। उन्हें ईश्वरीय प्रसाद खिलाकर मुख मीठा कराया। साथ ही सेवांजली पत्रिका भेंटकर सुख शांति भवन में होने वाली सेवाओं से अवगत कराया। बीके आराधना, बीके दुर्गा, बीके हेमा, बीके डॉ. संजीव, बीके सुरेश भी मौजूद रहे।

इंदौर आगमन पर महामंडलेश्वर का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, इंदौर (मप्र) | ओम शांति भवन, न्यू पलासिया में महामंडलेश्वर डॉ. शिवस्वरुपानंद सरस्वती महाराज जोधपुर के पधारने पर जोनल निदेशिका राजयोगिनी आरती दीदी ने सम्मान किया। महाराज ने कहा कि यहां दिया जाने वाला ज्ञान सच्चा गीता ज्ञान है, जिससे ही मानव अपनी आंतरिक शांति को प्राप्त कर सकता है। इस दौरान बीके नारायण भाई सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में राजयोगिनी जयंती दीदी ने की शिरकत

शिव आमंत्रण, दुबई (यूएई)।

दुबई में आयोजित संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में ब्रह्माकुमारीज़ की ओर अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती दीदी ने सहभागिता की। इसमें उन्होंने कहा कि सबसे पहले हमें मानसिक स्तर पर अपनी सोच को बदलना होगा। क्योंकि जब हमारी सोच प्रकृति के प्रति रहमदिल, संवेदनशील, दयालु नहीं होगी तब तक हम प्रकृति बचाने के लिए अंतर्मन से पुख्ता प्रयास नहीं कर पाएंगे। इस दौरान लंदन से सिस्टर बीके मॉरीन, सिस्टर मेडिलिन, सिस्टर बीरू और सिस्टर अंकिता भी मौजूद रहीं।

जीवन में हर दिन उमंग और ताजगी से जीएं

शिव आमंत्रण, बरेली (उप्र)।

बीती बातों को भूल जाएं और हर दिन को एक नए उमंग और ताजगी के साथ जीएं। पुराने संस्कार छोड़ने होंगे, पुरानी सोच छोड़नी होगी, रिश्तों में लगी पुरानी गांठें खोलनी होंगी, तभी हमें खुशियां प्राप्त होंगी। उक्त विचार अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता एवं जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन ने ब्रह्माकुमारी संस्था बरेली द्वारा आयोजित 'जिन्दगी बने खुशहाल' कार्यक्रम में व्यक्त किए। कार्यक्रम विशप मंडल इन्टर कॉलेज ग्राउन्ड में आयोजित किया गया। उन्होंने कहा सुबह का समय मन में पॉजीटिव एनर्जी भरने का होता है। प्रातः उठते ही मन ही मन में परमात्मा का शुक्रिया करें। अपने लिए परमात्मा से शक्तियां लेकर खुद को सकारात्मकता और उमंग उत्साह से भरें। ये पॉजीटिव एनर्जी सारे दिन की हर परिस्थिति में आपको स्टेबल रखने में मददगार होती है। हमें जीवन में किसे से कुछ नहीं चाहिए बस सभी को दुआएं और सम्मान देने वाली आत्मा बनना है। सदैव अच्छा सोचें, सबके कल्याण का सोचें, जीवन में क्षमा करने के लिए हर समय तैयार रहना है।

लखनऊ से पधारीं बीके राधा दीदी ने शिवानी दीदी का परिचय कराया। पार्वती दीदी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाई-बहनों एवं बच्चों द्वारा बहुत सुन्दर गीत एवं नृत्य प्रस्तुत किए गए। इस दौरान पांच हजार से ज्यादा शहर प्रशासनिक अधिकारी, राजनीतिक क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति सहित महापौर डॉ.उमेश गौतम, सांसद संतोष गंगवार, अध्यक्ष जिला पंचायत रश्मि पटेल, आईपीएस विकाश कुमार वैद्य मौजूद रहे। नीता दीदी ने आभार व्यक्त किया गया।

राजभवन में राष्ट्रपति से की मुलाकात

शिव आमंत्रण, लखनऊ (उप्र)।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु के लखनऊ आगमन पर विभिन्न सेवाकेन्द्रों की इंचार्ज बहनों ने राजभवन जाकर भेंट कर स्वागत किया। वरिष्ठ भाइयों द्वारा राष्ट्रपति का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया गया। बहनों ने शिवबाबा का स्मृति चिंह भेंट किया। बीके सुमन बहन ने सम्मान-पत्र पढ़ कर सुनाया। इस दौरान बीके राधा बहन, सब जोन इंचार्ज, बीके मंजू बहन, बीके इंदिरा बहन, बीके मालती बहन, बीके चारु बहन, सेवानिवृत्त आईएएस डीसी लखा भाई, टेक्नो इंस्टीट्यूट के चेयरमैन आरके अग्रवाल और डॉ. भूपेंद्र भाई उपस्थित थे।

शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-

वार्षिक मूल्य 150 रुपए तीन वर्ष 450 रुपए
आजीवन 3500 रुपए
मो 9414172596, 8521095678
Website www.shivamantran.com

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड,
जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 8538970910, 9179018078
Email shivamantran@bkivv.org

For online transfer

A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV,
Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to:
shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 6377090960

Scan To Pay

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2024-26, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 Dec. 2023
» प्रकाशक व मुद्रकः करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » संपादकः ब्र.कु. कोमल » संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र